Sarada to Devanagari transliteration

Godavari Mahatmya

CC-0 Manuscript

(Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu)

Sarada to Devanagari transliteration

Page 1 Slokas L01.01 to L01.09

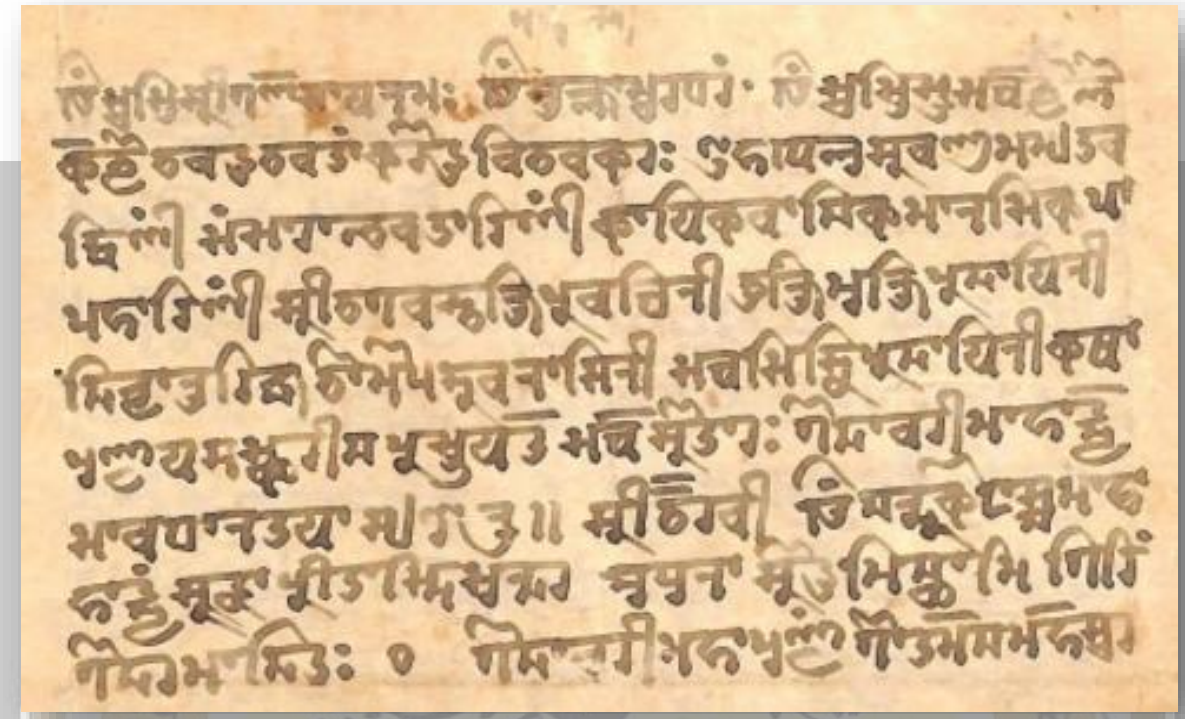

Sarada to Devanagari transliteration

Date	18th August, 2020

L01.01	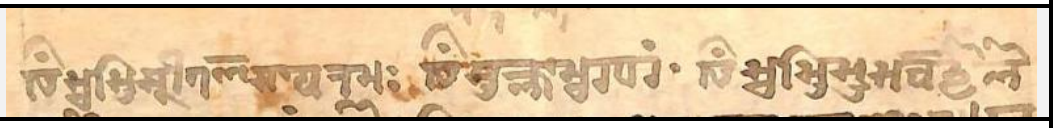
A01.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14151617 18 19 20 21 2223 24 25 ॐ स्व स्ति श्री ग णे शा य न मः। ॐ शु क्ला म्ब र ध रं. ॐ स्व स्ति स्तु स र्वे भ्यो लो-
B01.01	ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः। ॐ शुक्लाम्बरधरं. ॐ स्वस्तिस्तु सर्वेभ्यो लो-
L01.02	
A01.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1011 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 23 23 252627 के भ्यो भ व तु भव तां क रो तु वि भ व क रः इ ह ख लु श्र व णा म द त व-
B01.02	-केभ्यो भवतु भवतां करोतु विभवकरः इह खलु श्रवणामदतव-
L01.03	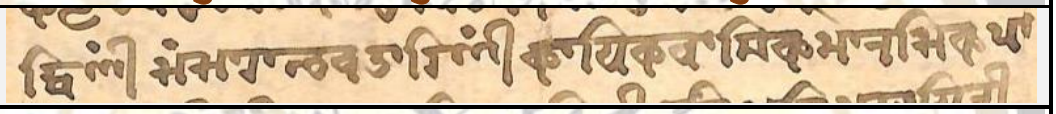
A01.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 र्धि णीं सं सा रा र्ण व ता रि णीं का यि क- वा चि क- मा न सि क-पा-
B01.03	र्धिणीं संसारार्णवतारिणीं कायिक-वाचिक-मानसिक-पा-
L01.04	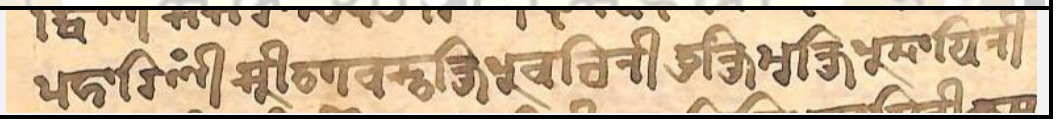
A01.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 प हा रि णीं श्री भ ग व द्भ क्ति प्र व र्धि नी भु क्ति मु क्ति प्र दा यि नी
B01.04	-पहारिणीं श्रीभगवद्भक्तिप्रवर्धिनी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी
L01.05	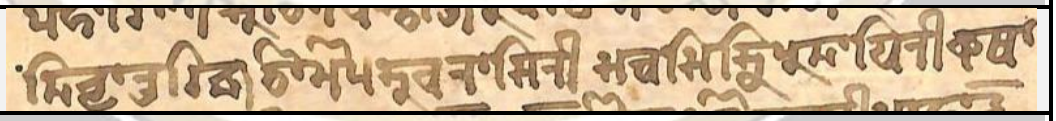
A01.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 दि व्या न्त रि क्ष-भौ मो प द्र व ना शि नी स र्व सि द्धि प्रदा यि नी क था
B01.05	दिव्यान्तरिक्ष-भौमोपद्रवनाशिनी सर्वसिद्धिप्रदायिनी कथा

Date	18th August, 2020, continued…

L01.06	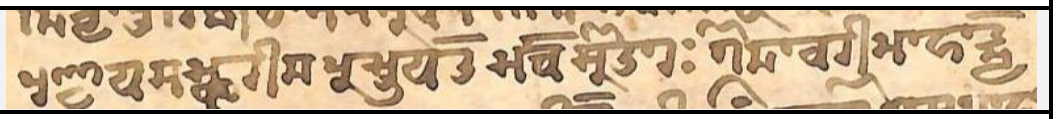
A01.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 पु ण्या य श स्क री च प्र सू य ते स र्वे श्रो ता रः गो दा व री मा हा त्म्ये
B01.06	पुण्या यशस्करी च प्रसूयते सर्वे श्रोतारः गोदावरी माहात्म्ये-
L01.07	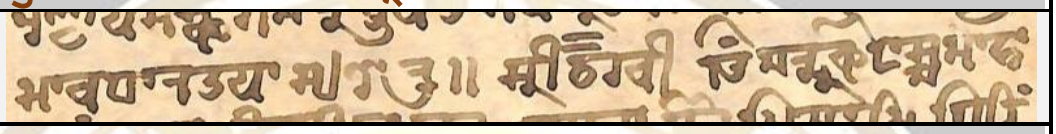
A01.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 ॥ 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 सा व धा न त या श्रु ण्व न्तु ॥ श्री भै र वी ॐ च न्द्र को ट श्च मा हा-
B01.07	सावधानतया श्रुण्वन्तु॥ श्री भैरवी ॐ चन्द्रकोटश्चमाहा-
L01.08	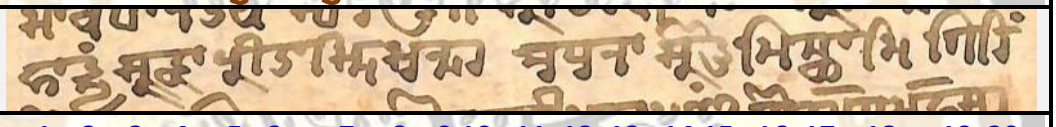
A01.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 हात्म्यं श्रु त्वा प्री ता स्मि सु न्द र अ धु ना श्रो तु मि च्छा मि गि रिं
B01.08	-हात्म्यं श्रुत्वा प्रीतास्मि सुन्दर अधुना श्रोतुमिच्छामि गिरिं
L01.09	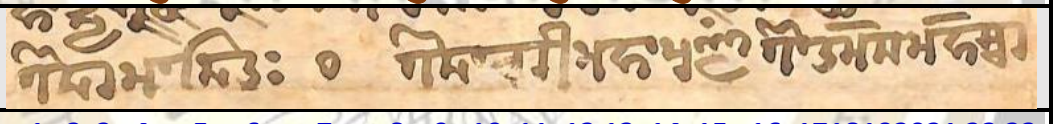
A01.09	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 गो द र मा दि तः १ गो दा व री महा पु ण्यां गौ त मे च म हे श्व र
B01.09	गोदरमादितः॥१॥ गोदावरी महापुण्यां गौतमे च महेश्वर

Sarada to Devanagari transliteration

Date	18th August, 2020, continued…

	1. In Line **01.01** स्वस्तिस्तु is correct, **स्वस्त्यस्तु / स्वस्तिरस्तु / स्वस्ति अस्तु** - any reading can also be perfect. 2. In Line 0**1.07** – we have to remove extra **हा**.
Notes	3. Line **01.09** – will continue to page **02.01** 4. Version – 3: a. **॥ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ शुक्लाम्बरधरं..** b. **ॐ स्वस्तिस्तु सर्वेभ्यो लोकेभ्यो भवतु भवतां करोतु विभवकरः इह खलु श्रवणामृतवर्धिणीं संसारार्णवतारिणीं कायिक-वाचिक-मानसिक-पापहारिणीं श्रीभगवद्भक्तिप्रवर्धिनी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी दिव्यान्तरिक्ष-भौमोपद्रवनाशिनी सर्वसिद्धिप्रदायिनी कथा पुण्या यशस्करी च प्रसूयते सर्वे श्रोतारः गोदावरी माहात्म्ये सावधानतया श्रुण्वन्तु॥** c. **श्री भैरवी ॐ चन्द्रकोटश्च माहात्म्यं श्रुत्वा प्रीतास्मि सुन्दर। अधुना श्रोतुमिच्छामि गिरिं गोदरमादितः॥१॥ गोदावरी महापुण्यां गौतमे च महेश्वर-**

Page 2 Slokas L02.01 to L02.09

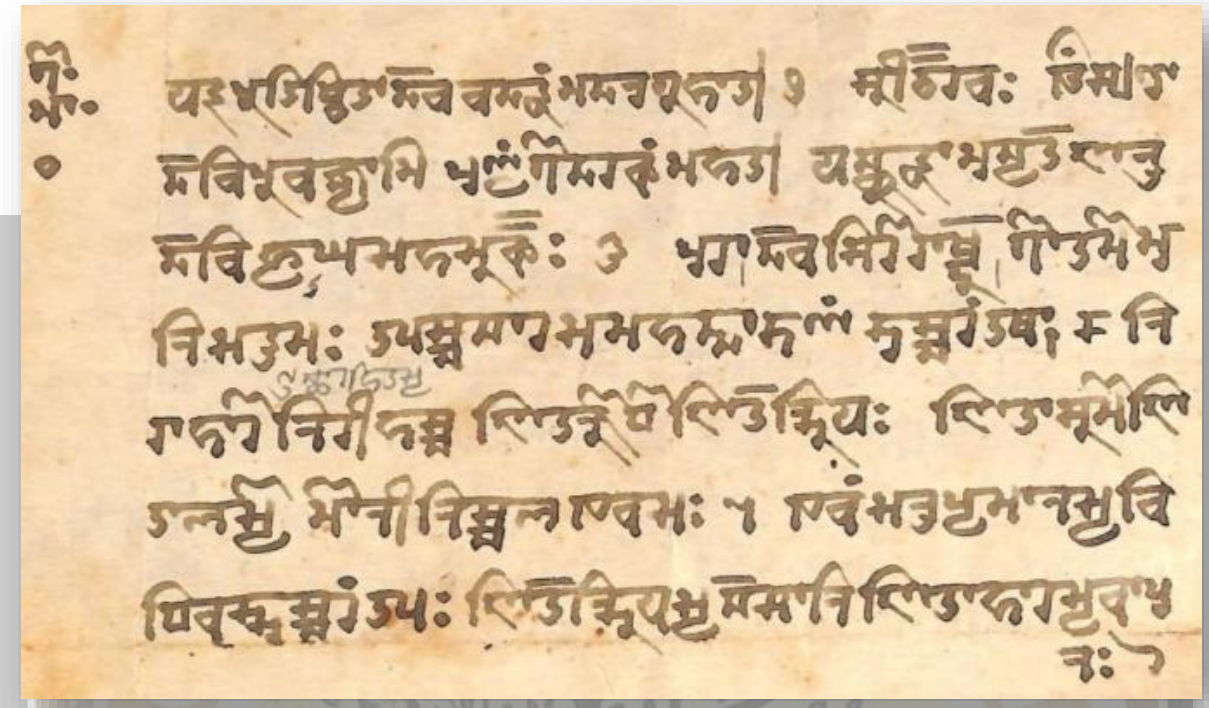

Sarada to Devanagari transliteration

Date	19th August, 2020

L02.01	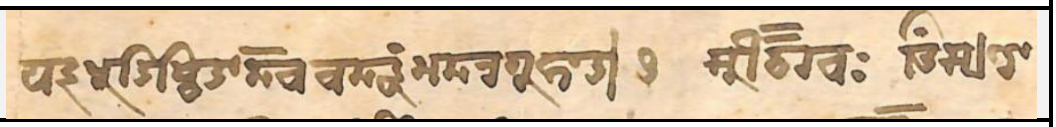
A02.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 य त्र प्र ति ष्ठिता दे व व द त्वं म द नुग्र हा त् ॥२॥ श्री भै र वः ॐ शृ णु
B02.01	यत्र प्रतिष्ठितादेववदत्वं मदनुग्रहात्॥२॥ श्रीभैरवः ॐ शृणु
L02.02	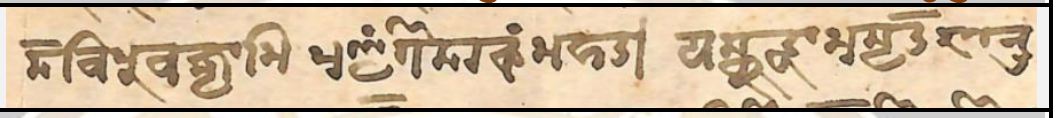
A02.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 दे वि प्र व क्ष्या मि पु ण्यंगो दा र कं म ह त्। य च्छ्रु त्वा मु च्य ते ज न्तु
B02.02	देवि प्रवक्ष्यामि पुण्यं गोदारकं महत्। यच्छ्रुत्वा मुच्यते जन्तु
L02.03	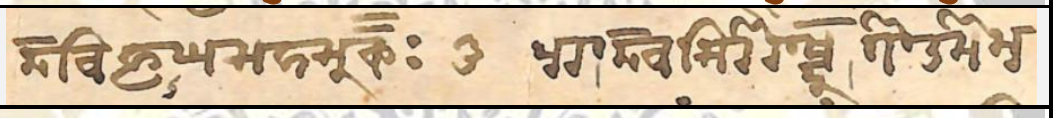
A02.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 दे वि ह्य घ स हस्त्र कैः ॥३॥ पु रा दे व शि रो रा ष्ट्रे गौ त मो मु-
B02.03	देवि ह्यऽघसहस्त्रकैः॥३॥ पुरादेव शिरोराष्ट्रे गौतमो मु -
L02.04	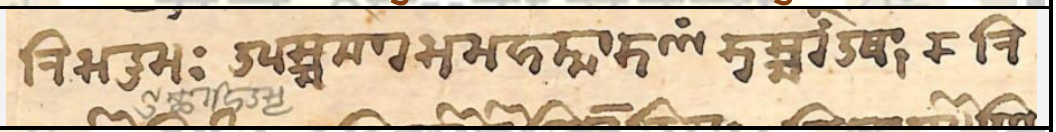
A02.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 नि स त्त मः त प श्चचा र स म ह द्दा रु णं दु श्च रंतथा ॥४॥ नि
B02.04	-निसत्तमः। तपश्चचार स महद्दारुणं दुश्चरं तथा॥४॥ नि
L02.05	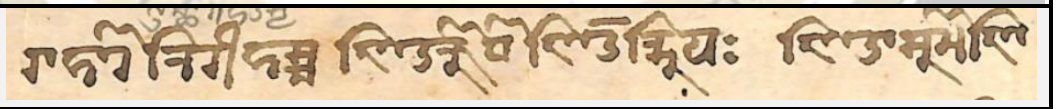
A02.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 रा हा रो नि री ह श्च जि त क्रो धो जि ते न्द्रियः जि ता श्र मो जि- (इच्छारहितस्य)
B02.05	राहारोनिरीहश्च (इच्छारहितस्य) जितक्रोधो जितेन्द्रियः। जिताश्रमो जि-

Date	19th August, 2020, continued…

L02.06	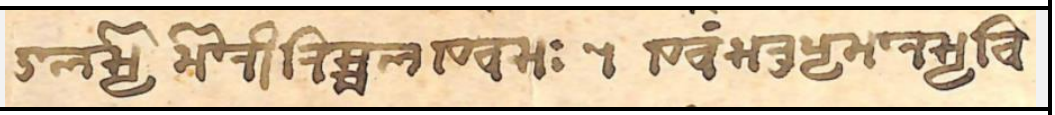
A02.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ता लस्यो मौ नी नि श्च ल ए व सः ॥५॥ ए वं स न्त प्य मा न स्यवि-
B02.06	तालस्यो मौनी निश्चल एव सः॥५॥ एवं सन्तप्यमानस्य वि -
L02.07	
A02.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 धि वृ द्ध श्चरंत पः जिते न्द्रि य स्यचे शानि जि ता हा र स्य वा पु नः॥६॥
B02.07	धिवृद्धश्चरं तपः। जितेन्द्रियस्य चेशानि जिताहारस्य वा पुनः॥६॥

Date	19th August, 2020, continued…

	1. In Line **02.05, the word** **इच्छारहितस्य** is similar to the word **निरीहश्च.** Actually, that should be **इच्छारहितश्च.** 2. (गोदावरी महापुण्यां गौतमे च महेश्वर) line continues from previous page, Line **01.09**
Notes	3. Version – 3: a. **(गोदावरी महापुण्यां गौतमे च महेश्वर) यत्र प्रतिष्ठितादेववदत्वं मदनुग्रहात्॥२॥** b. **श्रीभैरवः ॐ शृणु देवि पुण्यं प्रवक्ष्यामि गोदारकं महत्। यच्छ्रुत्वा मुच्यते जन्तु देवि ह्यऽघसहस्त्रकैः॥३॥** c. **पुरादेव शिरोराष्ट्रे गौतमो मुनिसत्तमः। तपश्चचार स महद्दारुणं दुश्चरं तथा॥४॥** d. **निराहारोनिरीहश्च (इच्छारहितस्य/श्च) जितक्रोधो जितेन्द्रियः। जिताश्रमो जितालस्यो मौनी निश्चल एव सः॥५॥** e. **एवं सन्तप्यमानस्य विधिवृद्धश्चरं तपः। जितेन्द्रियस्य चेशानि जिताहारस्य वा पुनः॥६॥**

Page 3 Slokas L03.01 to L03.07

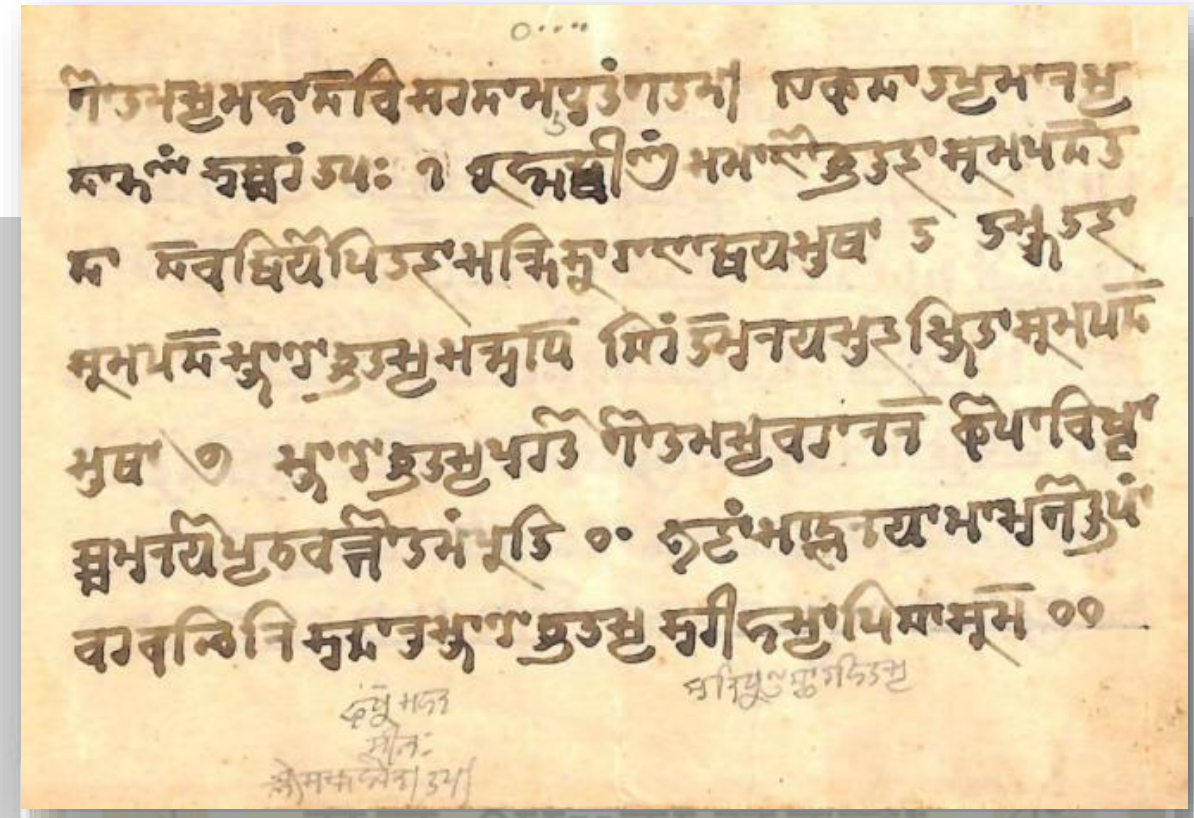

Sarada to Devanagari transliteration

Date	20th August, 2020

L03.01	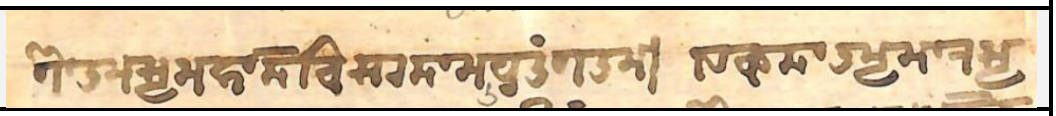
A03.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1011 12 131415 1617 18 19 20 2122 23 2425 गौ त म स्यम हा दे वि श र दा म^यु तंग त म्। ए क दा तप्य मा न स्य
B03.01	गौतमस्य महादेवि शरदामयुतं गतम्। एकदा तप्यमानस्य
L03.02	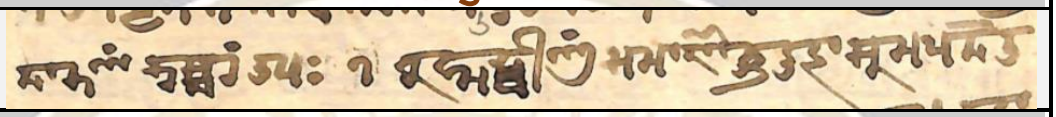
A03.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 2324 दा रु णं दु श्चरं त पः ॥७॥ ब्र ह्म र्षी णां स मा जो भू त त्रा श्र म प दे त-
B03.02	दारुणं दुश्चरं तपः॥७॥ ब्रह्मर्षीणां समाजोऽभूत्तत्राश्रमपदे त-
L03.03	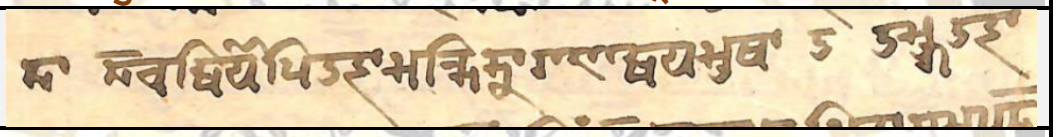
A03.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 -दा दे व र्षि यो पि त त्रा स न्सिद्धा रा ज र्ष य स्त था ॥८॥ त स्थु त त्रा-
B03.03	-दा देवर्षियोऽपि तत्रासन्सिद्धा राजर्षयस्तथा॥८॥ तस्थु तत्रा-
L03.04	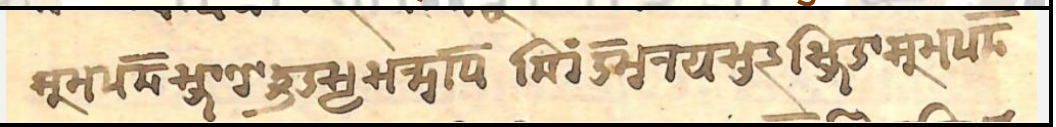
A03.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 151617181920 21 22 23 242526 श्र म प दे स्था णु भू त स्य स न्मु खे। चि रं ते मु न य स्त त्र स्थि ता श्र म प दे
B03.04	श्रमपदे स्थाणुभूतस्य सन्मुखे। चिरं ते मुनयस्तत्र स्थिताश्रमपदे
L03.05	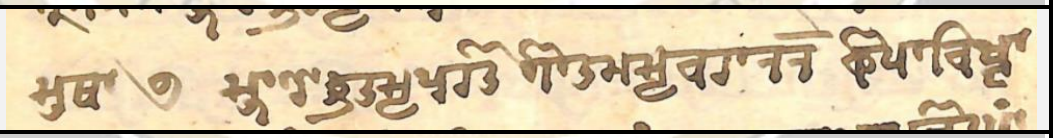
A03.05	1 2 3 4 5 6 7 8 91011 12 13 14 151617 18 19 20 21 22 23 स्त था ॥९॥ स्था णु भू त स्य पु र तो गौ त म स्य व रा न ने को पा वि ष्टा-
B03.05	स्तथा॥९॥ स्थाणुभूतस्य पुरतो गौतमस्य वरानने कोपाविष्टा-

Date	20th August, 2020 continued…

L03.06	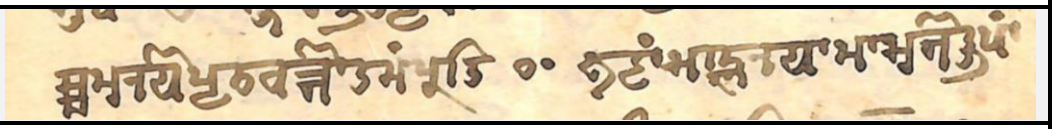
A03.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 2325 श्च मु न यो प्य भ व न् गौ त मं प्र ति॥१०॥ कृ त्यां स ञ्जा न या मा सु र्गो रू पां
B03.06	श्च मुनयोऽप्यभवन् गौतमं प्रति॥१०॥ कृत्यां सञ्जानयामासुर् गोरूपां
L03.07	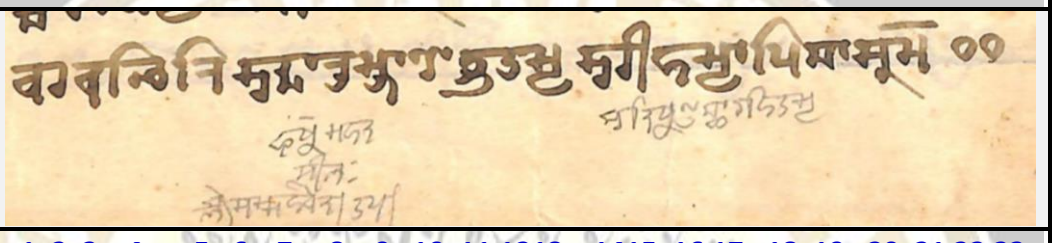
A03.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 1213 1415 16 17 18 19 20 21 22 23 व र व लि नि दु र्दा न्त स्था णु भू तस्य दु री ह स्या पि चा श्र मे ॥११॥
B03.07	वर वलिनि दुर्दान्त स्थाणुभूतस्य दुरीहस्यापि चाश्रमे॥११॥-

Date	20th August, 2020, continued…

Notes	1. There is no clarity for the words **वरवलिनि दुर्दान्त** 2. Version – 3: a. **गौतमस्य महादेवि शरदामयुतं गतम्। एकदा तप्यमानस्य दारुणं दुश्चरं तपः॥७॥** b. **ब्रह्मर्षीणां समाजोऽभूत्तत्राश्रमपदे तदा देवर्षियोऽपि तत्रासन्सिद्धा राजर्षयस्तथा॥८॥** c. **तस्थु तत्राश्रमपदे स्थाणुभूतस्य सन्मुखे। चिरं ते मुनयस्तत्र स्थिताश्रमपदेस्तथा॥९॥** d. **स्थाणुभूतस्य पुरतो गौतमस्य वरानने कोपाविष्टाश्च मुनयोऽप्यभवन् गौतमं प्रति॥१०॥** e. **कृत्यां सञ्जानयामासुर्गोरूपां वरवलिनि दुर्दान्तस्थाणुभूतस्य दुरीहस्यापि चाश्रमे॥११॥**

Page 3 Slokas L03.01 to L03.07

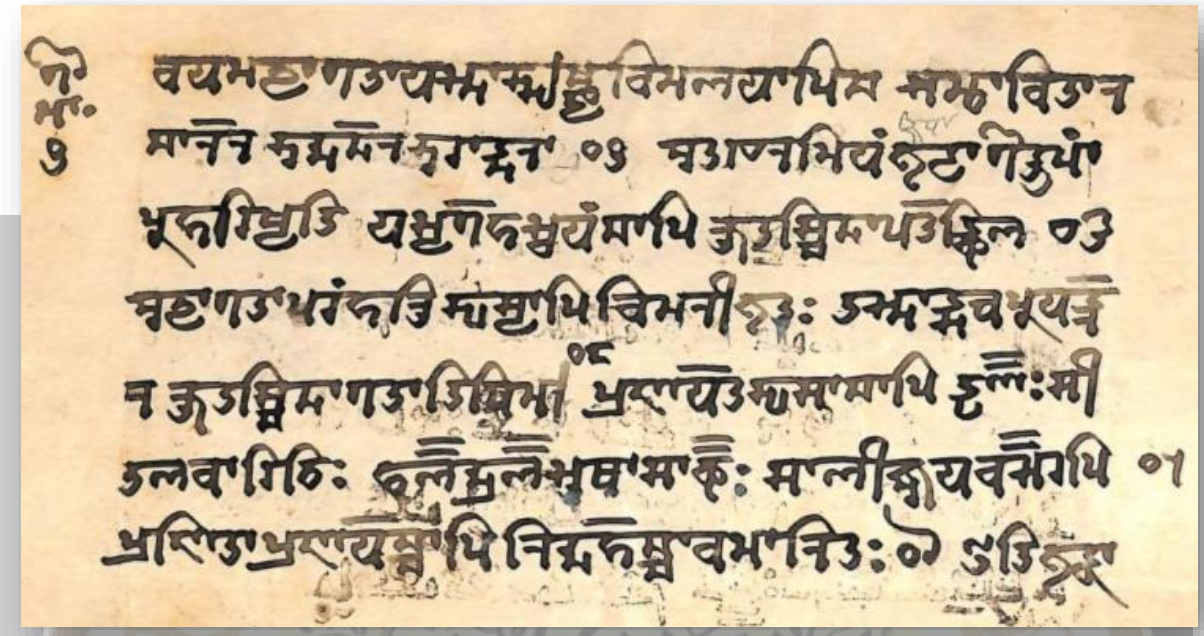

Sarada to Devanagari transliteration

Date	21st August, 2020

L04.01	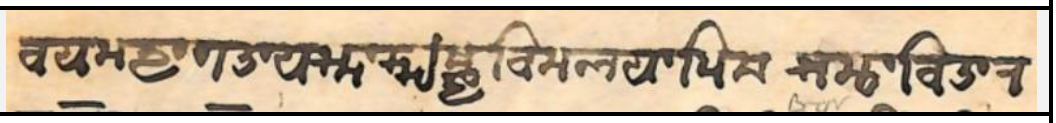
A04.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 21 व य म भ्या ग ता य स्मा द्द ष्ट्यावि म ल या पि च स म्भा वि ता न
B04.01	वयमभ्यागता यस्माद्दृष्ट्या विमलयापि च। सम्भाविता न
L04.02	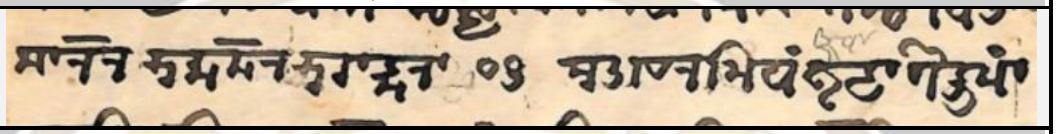
A04.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 23 24 चा ने न दु र्म दे न दु रा त्म ना १ २ अ त ए न मि यं कृ त्या गो रू पां
B04.02	चानेन दुर्मदेन दुरात्मना॥१२॥ अत एनमियं कृत्या गोरूपां
L04.03	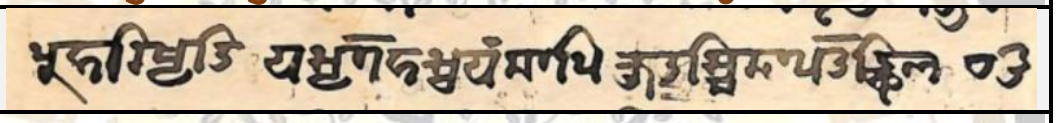
A04.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 2223 प्र ह रिष्य ति य स्य गे ह स्व यं चा पि कु त श्चि दा प ते त्कि ल १ ३
B04.03	प्रहरिष्यति। यस्य गेहस्वयं चापि कुतश्चिदापतेत्किल॥१३॥
L04.04	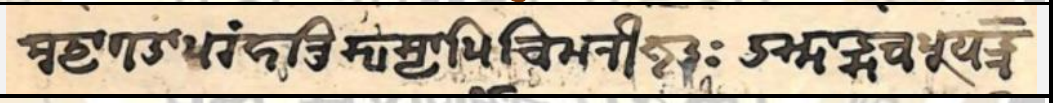
A04.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 212223 अ भ्याग ता प रं ह न्ति द्द श्या पि वि म नी कृ तः त स्मा त्स र्व प्र य त्ने-
B04.04	-अभ्यागता परं हन्ति दृश्यापि विमनी कृतः। तस्मात्सर्व प्रयत्ने-
L04.05	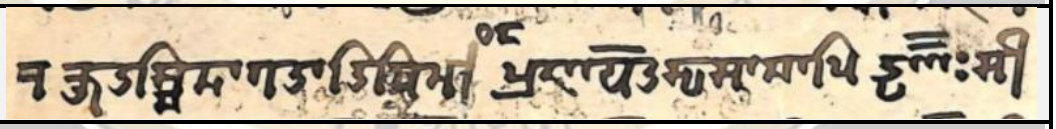
A04.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11121314 15 16 17 18 19 20 21 22 23 न कु त श्चि दा ग ता ति थि म् १ ४ प्र ज ये त द्द शा चा पि तृ णैः शी
B04.05	न कुतश्चिदागता तिथिम्॥१४॥ प्रजयेतदृशाचापि तृणैः शी

Date	21st August, 2020, continued…

L04.06	
A04.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 -त ल वा रि भिः फ लै र्द लै स्तथा शा कैः शा ली क्षु य व सै र पि १ ५
B04.06	-तलवारिभिः। फलैर्दलैस्तथाशाकैः शालीक्षुयवसैरपि॥१५॥
L04.07	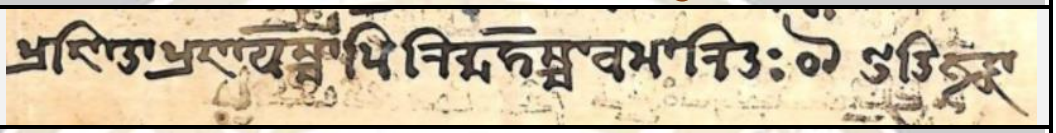
A04.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 पू जि ता पू ज ये श्चा पि नि र्द हे श्चा व मा नि तः १ ६ इ ति कृ त्वा
B04.07	पूजिता पूजयेश्चापि निर्दहेश्चावमानितः॥१६॥ इति कृत्वा

Date	21st August, 2020, continued…

Notes	1. Version – 3: a. वयमभ्यागता यस्माद्दृष्ट्या विमलयापि च। सम्भाविता न चानेन दुर्मदेन दुरात्मना॥१२॥ b. अत एनमियं कृत्या गोरूपां प्रहरिष्यति। यस्य गेहस्वयं चापि कुतश्चिदापतेत्किल॥१३॥ c. अभ्यागता परं हन्ति दृश्यापि विमनी कृतः। तस्मात्सर्व प्रयत्नेन कुतश्चिदागता तिथिम्॥१४॥ प्रजयेतदृशाचापि तृणैः शीतलवारिभिः। फलैर्दलैस्तथाशाकैः शालीक्षुयवसैरपि॥१५॥ d. पूजिता पूजयेश्चापि निर्दहेश्चावमानितः। इति कृत्वा

Page 5 Slokas L05.01 to L05.06

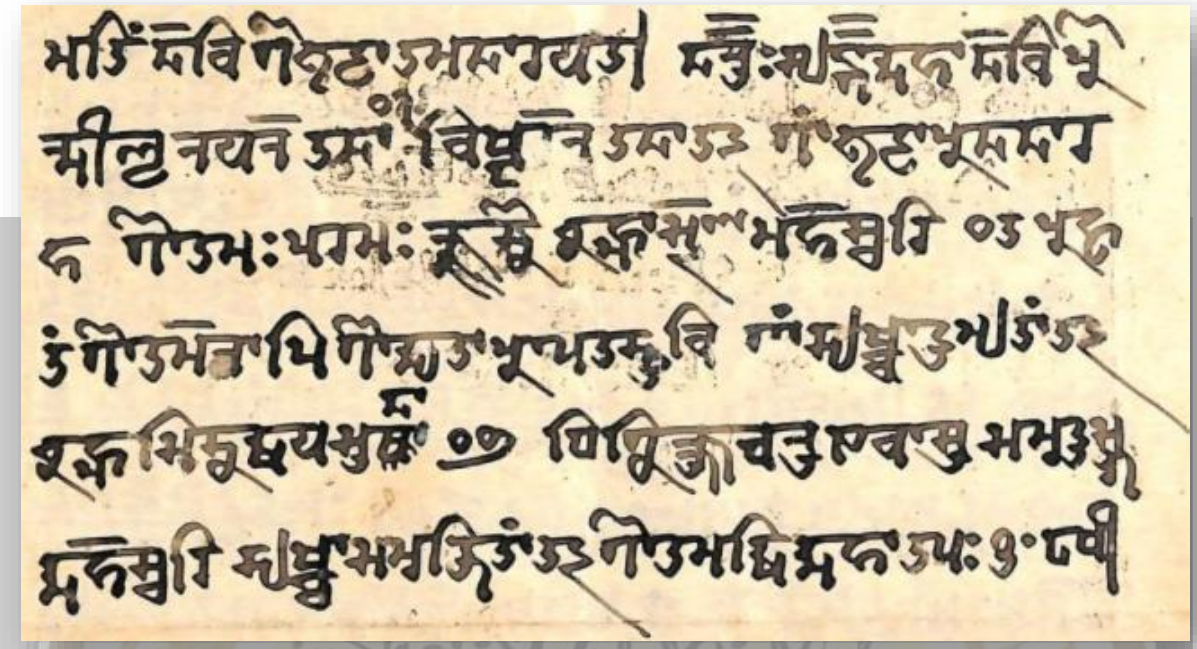

Sarada to Devanagari transliteration

Date	21st August, 2020

L05.01	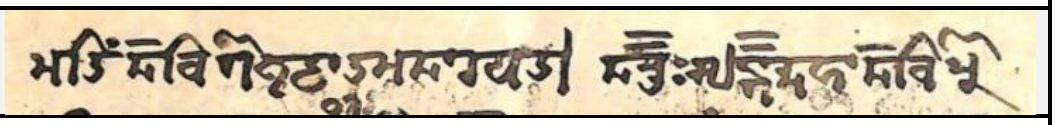
A05.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 म तिं दे वि गो कृ त्या त म दा र य त् द न्तैः शृ ङ्गै र्म हा दे वि प्रो-
B05.01	मतिं देवि गोकृत्या तमदारयत्। दन्तैः शृङ्गैर्महादेवि प्रो-
L05.02	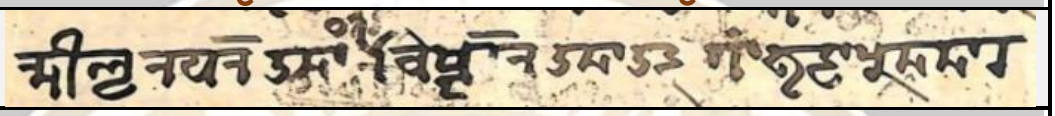
A05.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 1314 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 न्मी ल्य न य ने त दा १ ७ वि ष्ट रे न त दा त त्र गां कृ त्या प्र द दा र-
B05.02	न्मील्य नयने तदा॥१७॥ विष्टरेन तदा तत्र गां कृत्याप्रददार-
L05.03	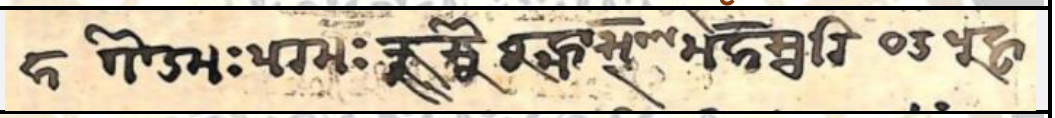
A05.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 1314 15 16 17 18 1920 21 22 ह गौ त मः प र मः क्रु द्धो ब्र ह्मा स्ने ण म हे श्व रि १ ८ प्र ह्य-
B05.03	ह। गौतमः परमः क्रुद्धो ब्रह्मास्नेण महेश्वरि ॥१८॥ प्रहय-
L05.04	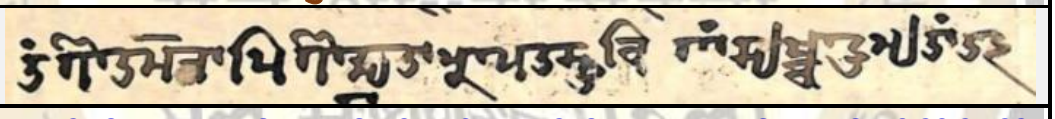
A05.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 1213 14 15 16 17 18 19 20 21 22 तं गौ त मे ना पि गौ र्इ ता प्रा प त द्भु वि गां दृ ष्ट्वा तु मृ तां त त्र
B05.04	तं गौतमेनापि गौर्इता प्रापतद्भुवि। गां दृष्ट्वा तु मृतां तत्र
L05.05	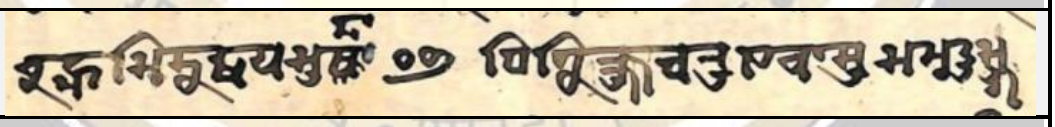
A05.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1011 12 13 14 1516 17 18 19 20 212223 ब्र ह्म सि द्ध र्ष य स्त था/दा १९ धि ग्धि क्कु र्वन्तु ए वा शु स म्द त स्थु
B05.05	ब्रह्मसिद्धर्षयस्तथा/दा॥१९॥ धिग्धिक्कुर्वन्तु एवाशु सम्दतस्थु

Sarada to Devanagari transliteration

Date	21st August, 2020 continued…

L05.06	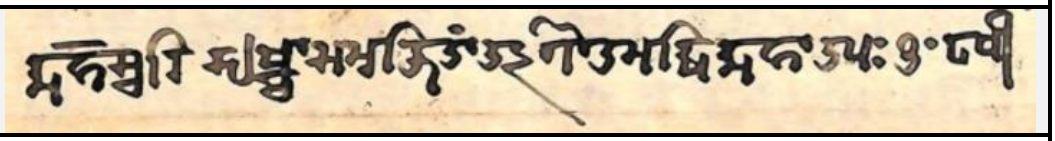
A05.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 र्म हे श्व रि द्द ष्ट्वा स मु त्थि तां त त्र गौ त म र्षि र्म हा त पः २ ० ऋषी
B05.06	र्महेश्वरि। दृष्ट्वा समुत्थितां तत्र गौतमर्षिर्महातपः॥२०॥ ऋषी

CORE SHARDA TEAM
मूल शारदा मंडली
शारदा सीखें • शारदा सिखाएं

Date	21st August, 2020, continued…

	1. There is lack of clarity on the verse number as more than half a verse is continuing from the previous page. 2. The ensuing three words need to be cross verified – **५.२ विष्टरेन**, **प्रददारह** and **सम्दतस्थु**.
Notes	3. Line **05.05**, even though the meter is complete using any of these, the word **तदा** will be perfect. 4. Version – 3: a. **[पूजिता पूजयेश्चापि निर्दहेश्चावमानितः। इति कृत्वा]** b. **मतिं देवि गोकृत्या तमदारयत्। दन्तैः शृङ्गैर्महादेवि प्रोन्मील्य नयने तदा॥१७॥** c. **विष्टरेन तदा तत्र गां कृत्याप्रददारह। गौतमः परमः क्रुद्धो ब्रह्मास्त्रेण महेश्वरि॥१८॥** d. **प्रहृयतं गौतमेनापि गौर्हता प्रापतद्भुवि। गां दृष्ट्वा तु मृतां तत्र ब्रह्मसिद्धर्षयस्तदा॥१९॥** e. **धिग्धिक्कुर्वन्तु एवाशु सम्दतस्थुर्महेश्वरि। दृष्ट्वा समुत्थितां तत्र गौतमर्षिर्महातपः॥२०॥** f. **ऋषी----**

Page 6 Slokas L06.01 to L06.07

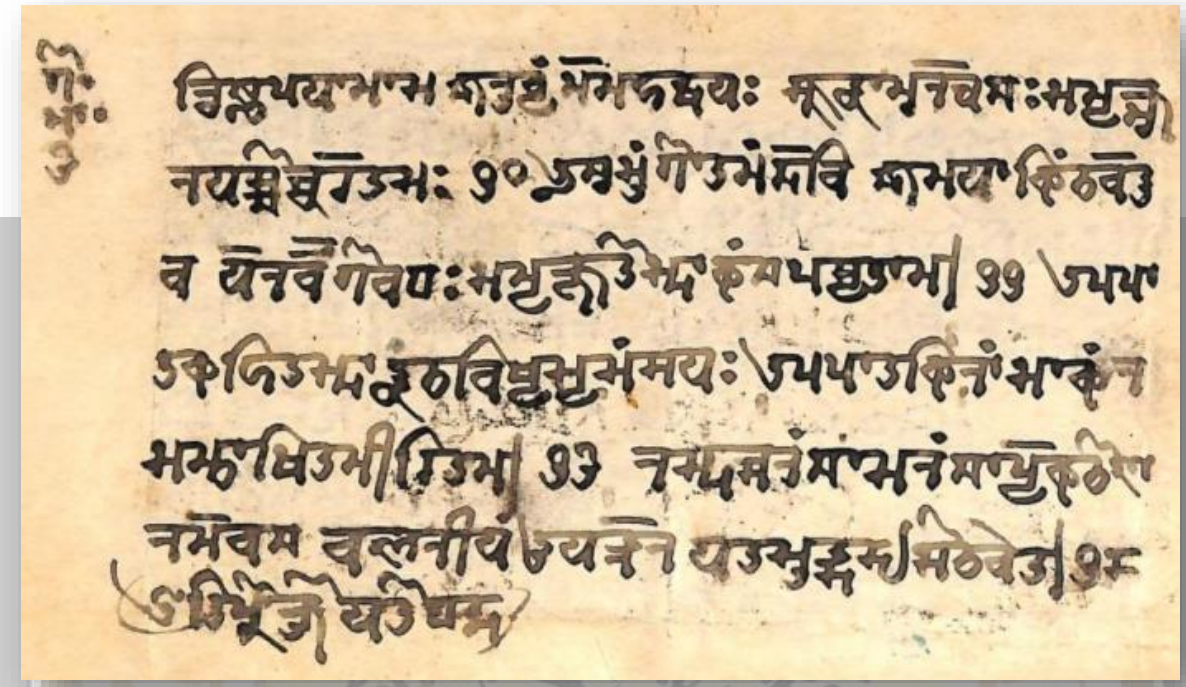

Sarada to Devanagari transliteration

Date	23rd August, 2020

L06.01	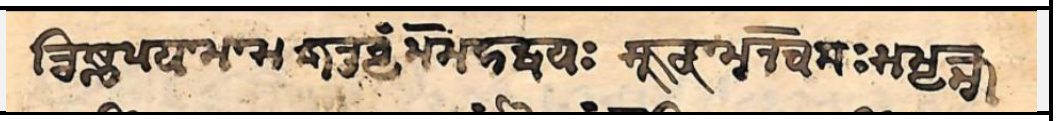
A06.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 1819 20 2122 23 न्वि ज्ञा प या मा स क्षन्त व्यं मे म ह र्ष यः श्रु त्वा मु नेर्व चः स म्य क्मु-
B06.01	न्विज्ञापयामास क्षन्तव्यं मे महर्षयः। श्रुत्वा मुनेर्वचः सम्यक्मु-
L06.02	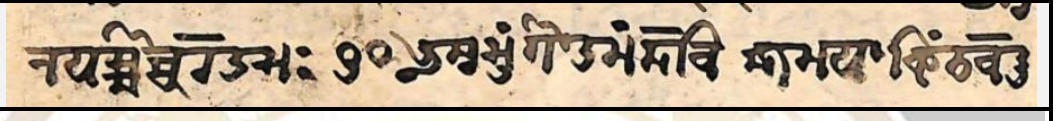
A06.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 न य श्चोर्ध्व रे त सः २१ ऊ चु स्तंगौ त मं दे वि क्ष म या किं भ वे त्त-
B06.02	नयश्चोर्ध्वरेतसः॥२१॥ ऊचुस्तं गौतमं देवि क्षमया किं भवेत्त-
L06.03	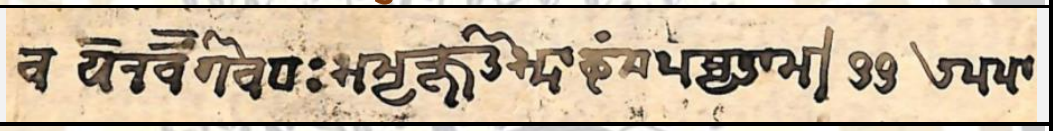
A06.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 1920 21 22 23 व ये न वै गो व धः स म्य क्कृ तो ऽस्मा कं च प श्य ता म् २ २ उ प पा-
B06.03	- व। येन वै गोवधः सम्यक् कृतोऽस्माकं च पश्यताम्॥२२॥ उपपा-
L06.04	
A06.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 त क हि त स्मा त्व भ वि ष्य स्य सं श यः उ प पा त कि नां सा कं न-
B06.04	तक हि तस्मात्त्व भविष्यस्य संशयः। उपपातकिनां साकं न-
L06.05	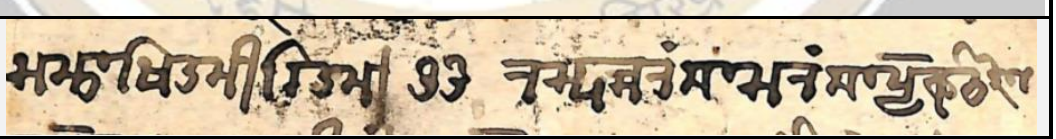
A06.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 1415 16 17 18 19 20 21 22 स म्भा षि त मी रि त म् २ ३ न स्प र्श नंचा स नं चा प्ये क भो ज-
B06.05	सम्भाषितमीरितम्॥२३॥ न स्पर्शनं चासनं चाप्येकभोज-

Sarada to Devanagari transliteration

Date	23rd August, 2020 continued…

L06.06	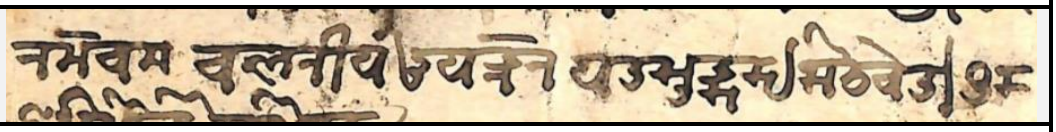
A06.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 न मे व च व र्ज नी यं तु य त्नेन य त स्त त्स द शो भ वे त् २ ४
B06.06	नमेव च। वर्जनीयं तु यत्नेन यतस्तत्सदृशो भवेत्॥२४॥
L06.07	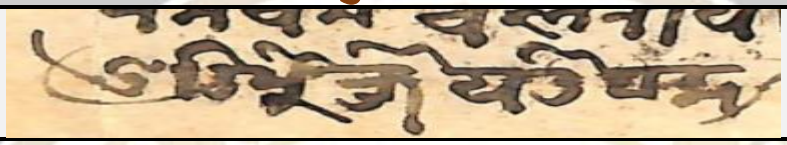
A06.07	1 2 3 4 5 6 7 8 इ ति प्रो क्तो य तो ध र्म
B06.07	इति प्रोक्तो यतो धर्म

Date	23rd August, 2020, continued…

Notes	1. Version – 3: a. [ऋषी--] न्विज्ञापयामास क्षन्तव्यं मे महर्षयः। श्रुत्वा मुनेर्वचः सम्यक्मुनयश्चोर्ध्वरेतसः॥२१॥ b. ऊचुस्तं गौतमं देवि क्षमया किं भवेत्तव। येन वै गोवधः सम्यक् कृतोऽस्माकं च पश्यताम्॥२२॥ उपपातक हि तस्मात्वभविष्यस्य संशयः। उपपातकिनां साकं न सम्भाषितमीरितम्॥२३॥ c. न स्पर्शनं चासनं चाप्येकभोजनमेव च। वर्जनीयं तु यत्नेन यतस्तत्सदृशो भवेत्॥२४॥ No need to give this line because it will come in next verse इति प्रोक्तो यतो धर्म.

Page 7 Slokas L07.01 to L07.07

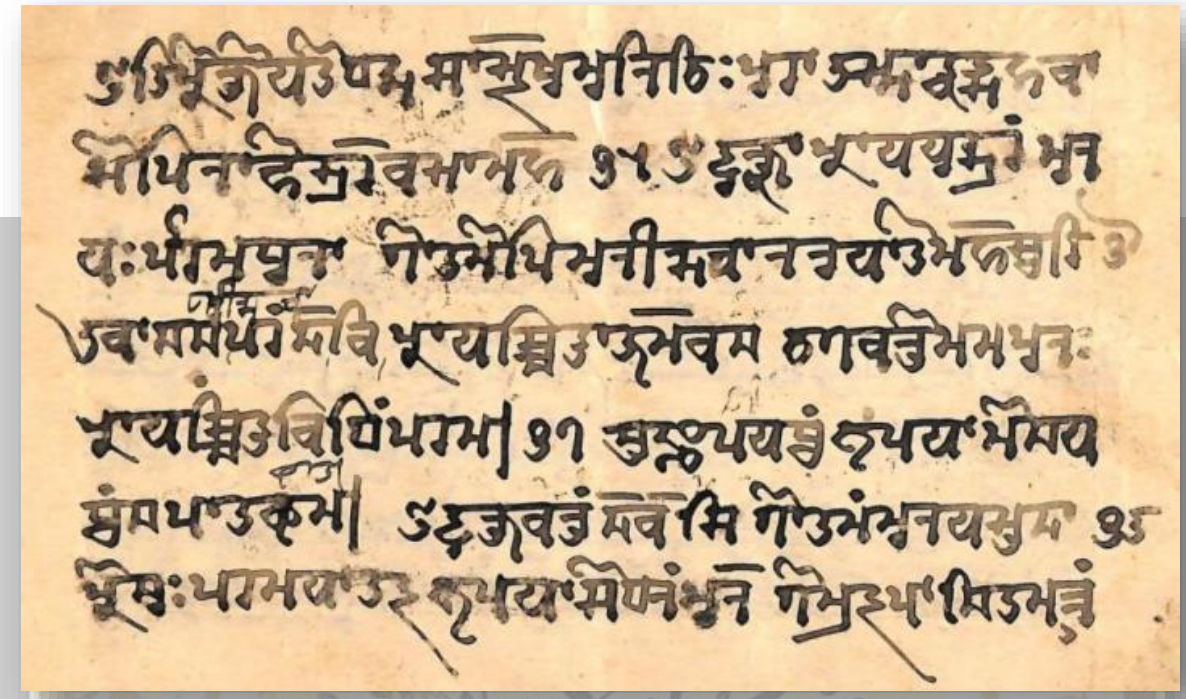

Sarada to Devanagari transliteration

Date	23rd August, 2020

L07.01	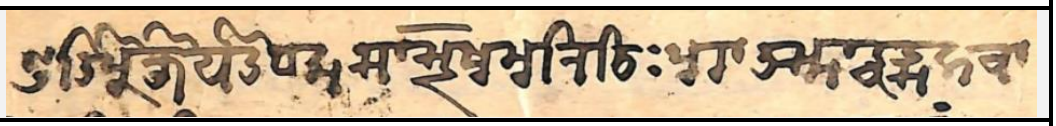
A07.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 इ ति प्रो क्तोय तो ध र्म शा स्त्रे षु मु नि भिः पु रा त स्मा त्व त्स ह वा
B07.01	इति प्रोक्तो यतो धर्मशास्त्रेषु मुनिभिः पुरा। तस्मात्त्वत्सहवा-
L07.02	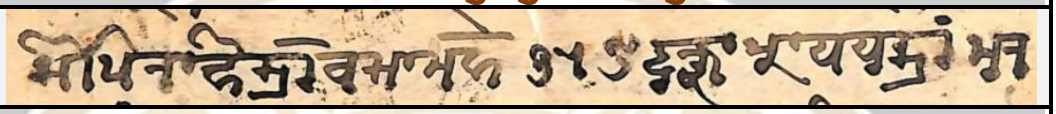
A07.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 2122 सो पि ना र्हो दू रे व सा म हे २ ५ इ त्युक्त्वा प्रा य यु र्दू रं मु न-
B07.02	सोऽपि नार्हो दूरे वसामहे॥२५॥ इत्युक्त्वा प्राययुर्दूरं मुन-
L07.03	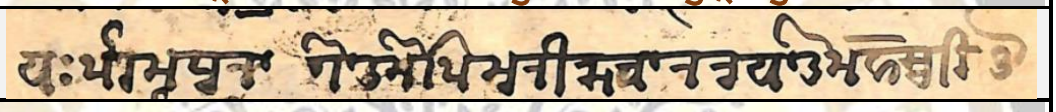
A07.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 यः प र म धु ना गौ त मो पि मु नी न्सर्वा न नु या तो म हे श्व रि २६
B07.03	-यः परमधुना। गौतमोऽपि मुनीन् सर्वाननुयातो महेश्वरि॥२६॥
L07.04	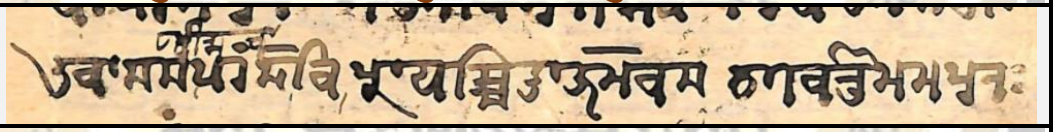
A07.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 222324 उ वा च च प रं दे वि प्रा य श्चि त्ता र्थ मे व च भ ग वन्तो म म पु नः
B07.04	उवाच चपरं देवि प्रायश्चित्तार्थमेव च। भगवन्तो मम पुनः
L07.05	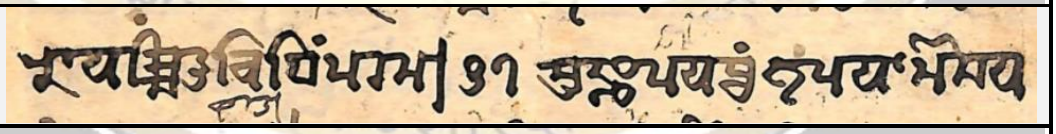
A07.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1011 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 प्रा य श्चि त्त वि धिं प र म् २ ७ आ ज्ञा प यध्वं कृ प या मो च य-
B07.05	प्रायश्चित्तविधिं परम्॥२७॥ आज्ञापयध्वं कृपया मोचय-

Date	23rd August, 2020 continued…

L07.06	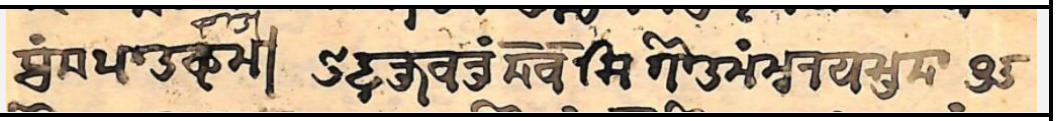
A07.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 1213 14 15 16 17 18192021 22 2324 ध्वं च पा त कं/पा त का त्। इ त्यु क्त व न्तं दे वे शि गौ त मं मु न य स्त दा॥२८॥
B07.06	ध्वं च पातकं/पातकात्। इत्युक्तवन्तं देवेशि गौतमं मुनयस्तदा॥२८॥
L07.07	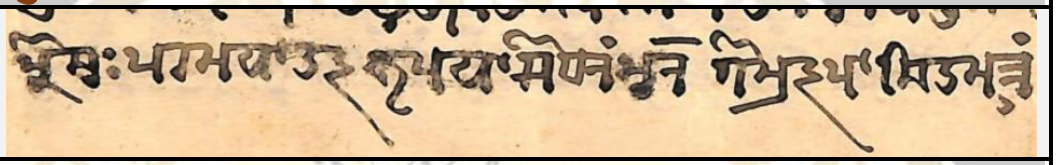
A07.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 1314 1516 17 18 19 20 21 22 2324 प्रो चुः प र म या त त्र कृ प या मो च नं मु नेः गो मू त्र-पा चि त म न्नं
B07.07	प्रोचुः परमया तत्र कृपया मोचनं मुनेः। गोमूत्र-पाचितमन्नं

Date	23rd August, 2020, continued…

Notes	1. Line 07.06 - **पातकात्** is most appropriate reading. 2. Version – 3: a. इति प्रोक्तो यतो धर्मशास्त्रेषु मुनिभिः पुरा। तस्मात्त्वत्सहवासोऽपि नार्हो दूरे वसामहे॥२५॥ b. इत्युक्त्वा प्राययुर्दूरं मुनयः परमधुना। गौतमोऽपि मुनीन् सर्वाननुयातो महेश्वरि॥२६॥ c. उवाच चपरं देवि प्रायश्चित्तार्थमेव च। भगवन्तो मम पुनः प्रायश्चित्तविधिं परम्॥२७॥ d. आज्ञापयध्वं कृपया मोचयध्वं च पातकं/पातकात्। इत्युक्तवन्तं देवेशि गौतमं मुनयस्तदा॥२८॥ e. प्रोचुः परमया तत्र कृपया मोचनं मुनेः। गोमूत्र-पाचितमन्नं

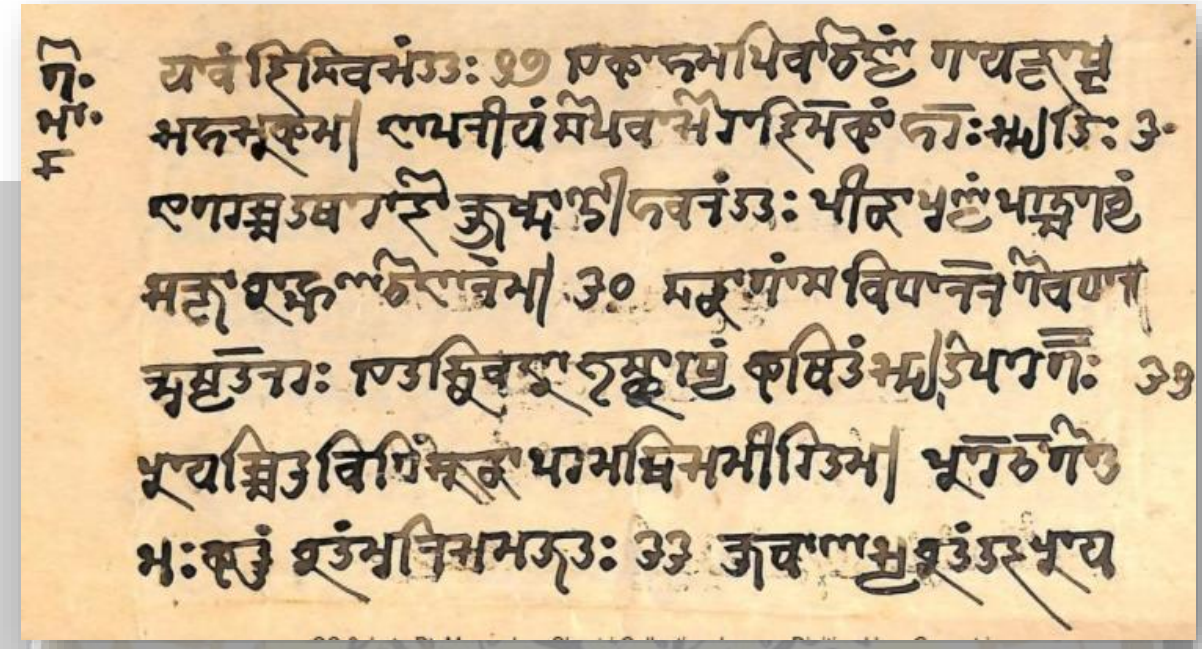

Page 8 Slokas L08.01 to L08.07

Sarada to Devanagari transliteration

Date	28th August 2020

L08.01	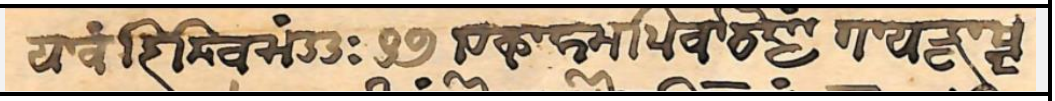
A08.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 या वं त्रि दि व सं ततः २९ ए का ह म पि वा भो ज्यं गा य त्र्या ष्ट-
B08.01	यावं त्रिदिवसं ततः॥ २९॥ एकाहमपि वा भोज्यं गायत्र्याष्ट-
L08.02	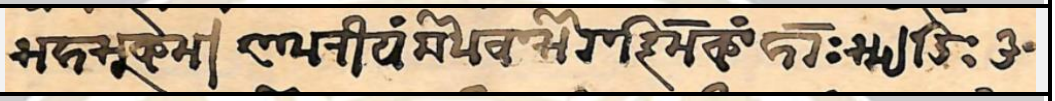
A08.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 स ह स्त्र क म् ज प नी यं चो प वा सो रा त्रि मे कां ह रेः स्मृ तिः ३०
B08.02	सहस्त्रकम्। जपनीयं चोपवासो रात्रिमेकां हरेः स्मृतिः॥३०॥
L08.03	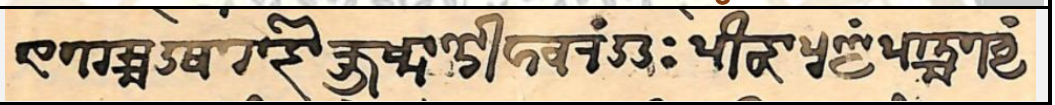
A08.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 जा ग र श्चत था रा त्रौ कू ष्मा ण्डी ह व नं त तःपी त्वा पु ण्यं प ञ्च ग व्यं
B08.03	- जागरश्च तथा रात्रौ कूष्माण्डी हवनं ततः पीत्वा पुण्यं पञ्चगव्यं
L08.04	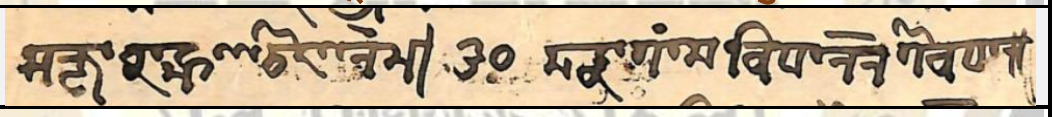
A08.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 न्मु च्य ते न रः ए त द्धि व ज्र कृ च्छ्रा ख्यं क थि तं स्मृ तो प ग णैः॥३२॥
B08.04	शक्त्या ब्राह्मणभोजनम्॥३१॥ दर्भागां च विधानने गोवधा
L08.05	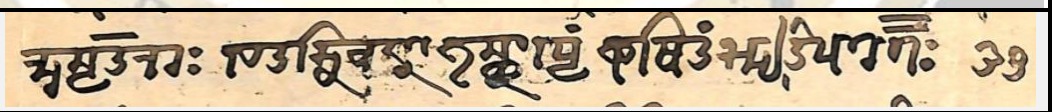
A08.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 न्मु च्यते न रः ए त द्धि व ज्र कृच्छ्रा ख्यं क थि तं स्मृ तो प ग णैः ३ २
B08.05	न्मुच्यते नरः। एतद्धि वज्रकृच्छ्राख्यं कथितं स्मृतोपगणैः॥३२॥

Date	28th August 2020 continued…

L08.06	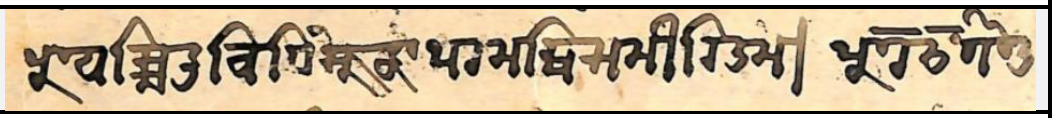
A08.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 प्रा य श्चि त्त वि धिं श्रु त्वा प र म र्षि स मी रि त म्। प्रा रे भे गौ त-
B08.06	प्रायश्चित्तविधिं श्रुत्वा परमर्षिसमीरितम्। प्रारेभे गौत-
L08.07	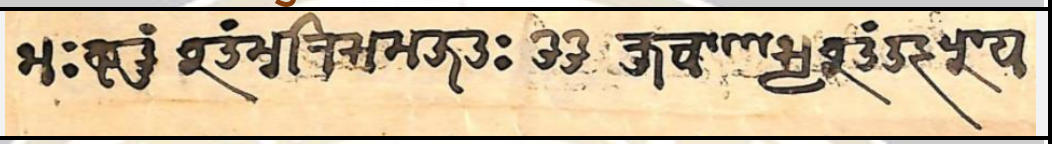
A08.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 मः क तुं व्र तं मु नि स म र्थ तः ३ ३ कु र्वा ण स्य व्र तं त त्र प्रा य
B08.07	मः तुं व्रतं मुनिसमर्थतः॥३३॥ कुर्वाणस्य व्रतं तत्र प्राय

Date	28th August, 2020, continued…

Notes	1. Version – 3: a. [प्रोचुः परमया तत्र कृपया मोचनं मुनेः। गोमूत्र-पाचितमन्नं] यावं त्रिदिवसं ततः॥ २९॥ b. एकाहमपि वा भोज्यं गायत्र्याष्टसहस्त्रकम्। जपनीयं चोपवासो रात्रिमेकां हरेः स्मृतिः॥३०॥ c. जागरश्च तथा रात्रौ कूष्माण्डीहवनं ततः पीत्वा पुण्यं पञ्चगव्यं शक्त्या ब्राह्मणभोजनम्॥३१॥ d. दर्भागां च विधानने गोवधान्मुच्यते नरः। एतद्धि वज्रकृच्छ्राख्यं कथितं स्मृतोपगणैः॥३२॥ e. प्रायश्चित्तविधिं श्रुत्वा परमर्षिसमीरितम्। प्रारेभे गौतमः कर्तुं व्रतं मुनिसमर्थतः॥३३॥ f. कुर्वाणस्य व्रतं तत्र प्राय

Page 9 Slokas L09.01 to L09.07

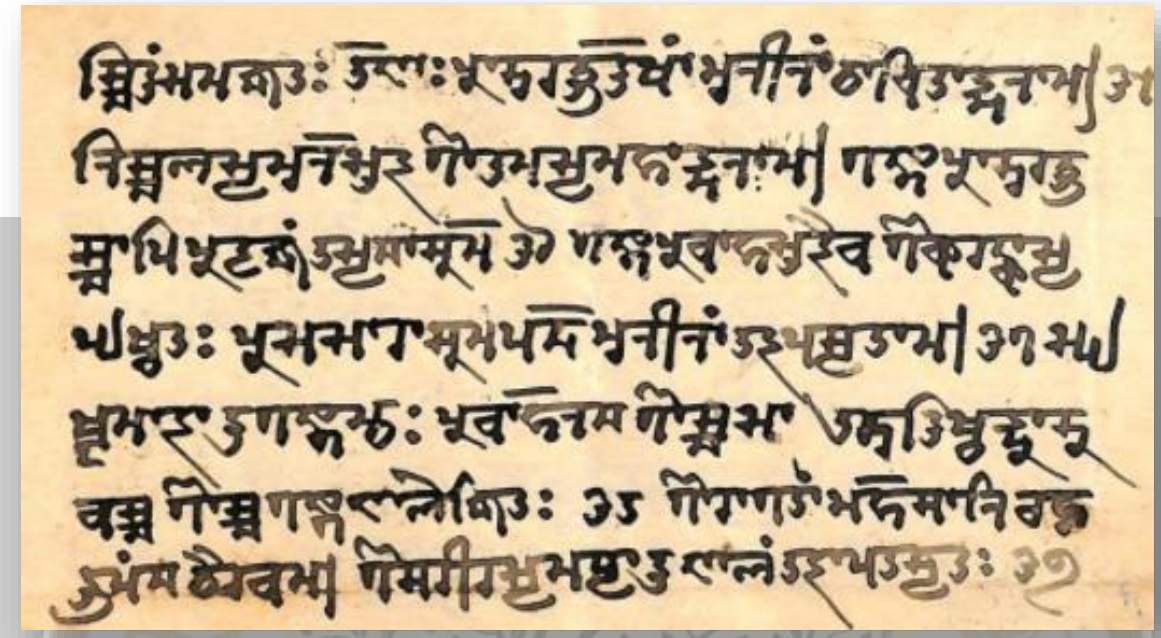

Date	28th August 2020

L09.01	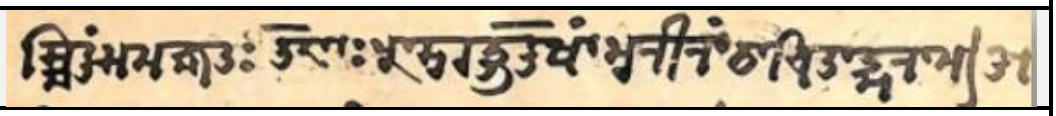
A09.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 श्चि त्तं स म क्ष तः ते ज: प्रा दु र भू त्ते षां मु नी नां भा वि ता त्म ना म्॥३४॥
B09.01	श्चित्तं समक्षतः तेजः प्रादुरभूत्तेषां मुनीनां भावितात्मनाम्॥३४॥
L09.02	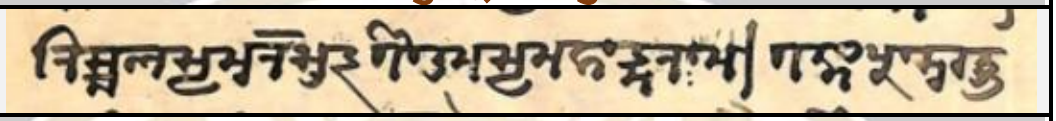
A09.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 नि श्च ल स्य मु ने स्त त्र गौ त म स्य म हा त्म ना म्। ग ङ्गा प्रा दु र भू -
B09.02	निश्चलस्य मुनेस्तत्र गौतमस्य महात्मनाम्। गङ्गा प्रादुर्भू-
L09.03	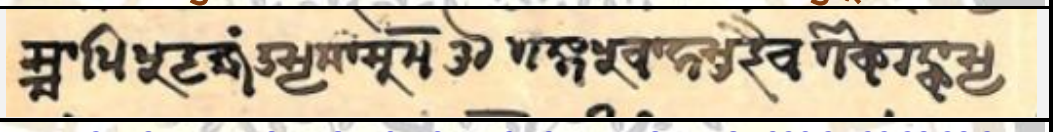
A09.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 23 25 श्चा पि प्र त्य क्षं त स्य चा मु खे॥३५॥ ग ङ्गा प्र वा ह स्त त्रै व गो क र ङ्ग स्य
B09.03	- श्चा पि प्र त्य क्षं त स्य चा मु खे॥३५॥ ग ङ्गा प्र वा ह स्त त्रै व गो क र ङ्ग स्य
L09.04	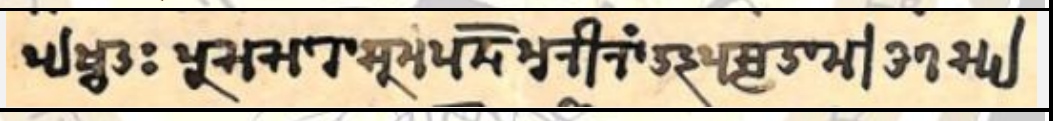
A09.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 पृ ष्ठ तः प्र स सा रा श्र म प दे मु नी नां त त्र पश्य ता म् ३ ६ स्पृ-
B09.04	पृष्ठतः प्रससाराश्रमपदे मुनीनां तत्र पश्यताम्॥३६॥ स्पृ-
L09.05	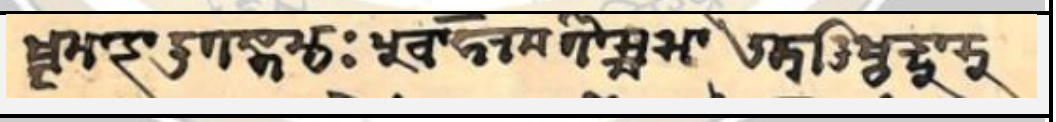
A09.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ष्टा मा त्रा तु ग ङ्गा म्भः प्र वा हे न च गौ श्च सा त दु त्ति ष्ठ त्प्रा द्र-
B09.05	ष्टा मात्रा तु गङ्गाम्भः प्रवाहेन(ण) च गौश्च सा तदुत्तिष्ठत् प्राद्र-

Date	28th August 2020 continued…

L09.06	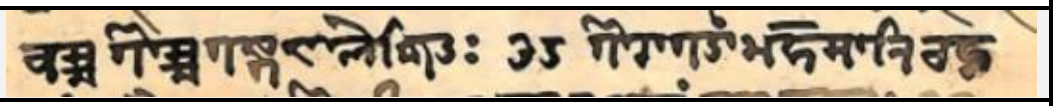
A09.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 1718 19 20 21 22 व श्च गो श्च ग ङ्गा ज ले क्षि तः ३ ७ गौ रा ग तां म हे शा नि ब हु-
B09.06	वश्च गोश्च गङ्गाजलेक्षितः॥३७॥ गौरागतां महेशानि बहु-
L09.07	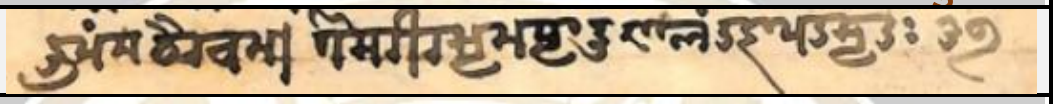
A09.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1011 12 13 14 15 16 17 181920212224 2526 रू पं च भै र व म् गो श री र स्य म ध्या तु ज लं त त्रा प तद्य तः ३ ८
B09.07	रूपं च भैरवम्। गोशरीरस्य मध्या तु जलं तत्रापतद्यतः॥३८॥

Sarada to Devanagari transliteration

Date	28th August, 2020, continued…

Notes	1. In Line **09.05** **प्रवाहेण** will be correct form 2. **प्राद्रवश्च** - The word is not clear 3. Version – 3: a. **[कुर्वाणस्य व्रतं तत्र प्राय-] श्चित्तं समक्षतः तेजः प्रादुर्भूतेषां मुनीनां भावितात्मनाम्॥३४॥** b. **निश्चलस्य मुनेस्तत्र गौतमस्य महात्मनाम्। गङ्गा प्रादुर्भूश्चापि प्रत्यक्षं तस्य चामुखे॥३५॥** c. **गङ्गाप्रवाहस्तत्रैव गोकरङ्गस्य पृष्ठतः प्रससाराश्रमपदे मुनीनां तत्र पश्यताम्॥३६॥** d. **स्पृष्टा मात्रा तु गङ्गाम्भः प्रवाहेण च गौश्च सा तदुत्तिष्ठत् प्राद्रवश्च गोश्च गङ्गाजलेक्षितः॥३७॥** e. **गौरागतां महेशानि बहुरूपं च भैरवम्। गोशरीरस्य मध्या तु जलं तत्रापतद्यतः॥३८॥**

Page 10 Slokas L10.01 to L10.07

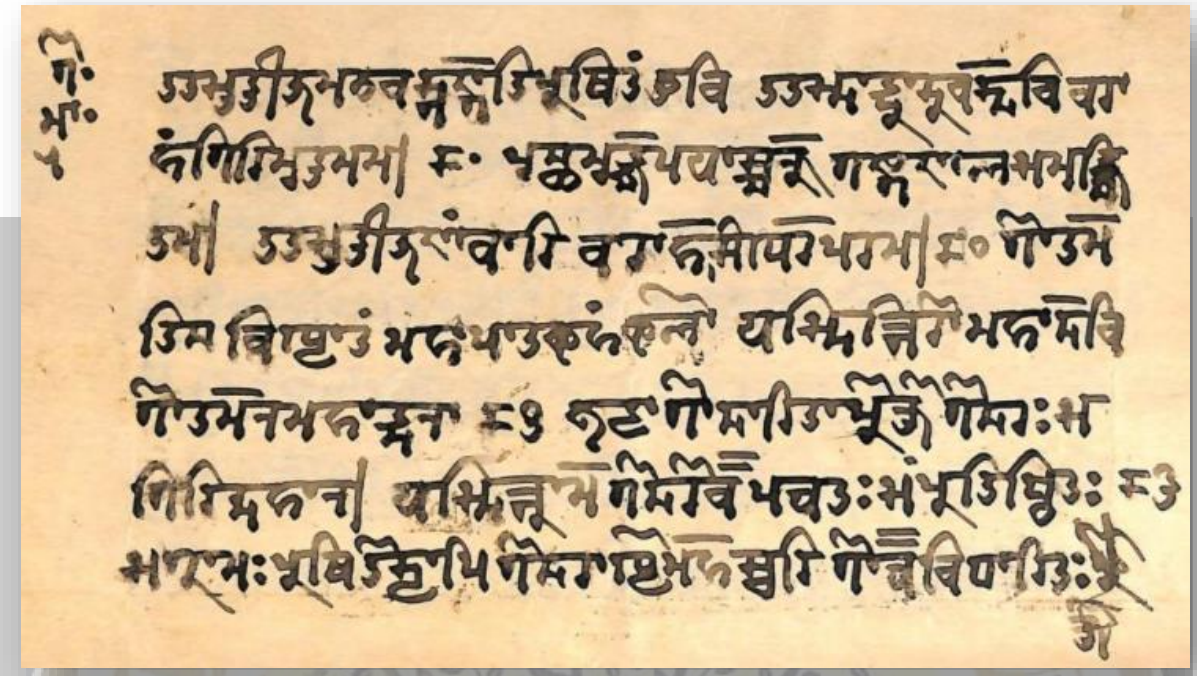

Sarada to Devanagari transliteration

Date	6th September 2020

L10.01	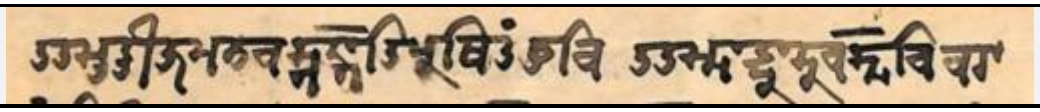
A10.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 23 24 25 ततस्त त्ती र्थ म भव द्ग ङ्गे ति प्र थि तं भु वि। त त स्मा त्प्रा द्र व द्दे वि व रा-
B10.01	ततस्तत्तीर्थमभवद्गङ्गेति प्रथितं भुवि। ततस्मात्प्राद्रवद्देवि वरा-
L10.02	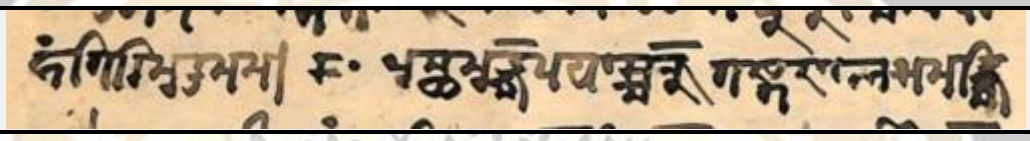
A10.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 हं गि रि मुत्त म म् ४० पु च्छ मुत्क्षे प या श्च क्रे ग ङ्गा ज ल स म र्क्षि-
B10.02	हं गिरिमुत्तमम्॥४०॥ पुच्छमुत्क्षेपयाश्चक्रे गङ्गाजलसमर्क्षि-
L10.03	
A10.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 त म्। त तस्त त्ती र्थ जं वा रि वा रा हे शि ख रे प र म् ४ १ गौ त मे-
B10.03	तम्। ततस्तत्तीर्थजं वारि वाराहे शिखरे परम्॥४१॥गौतमे-
L10.04	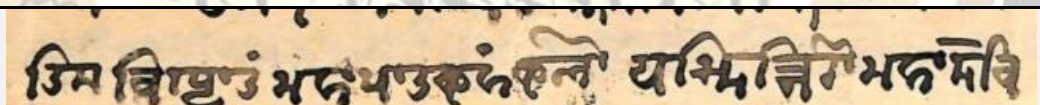
A10.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ति च वि ख्या तं म हा पा त क हं क लौ य स्मि न्गि रौ म हा दे वि
B10.04	ति च विख्यातं महापातकहं कलौ यस्मिन् गिरौ महादेवि
L10.05	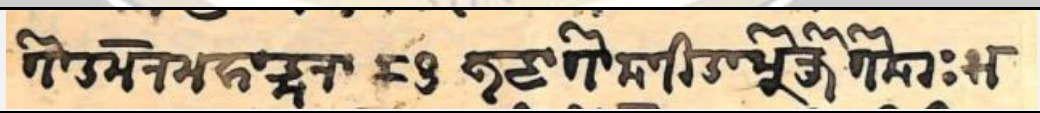
A10.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 गौ त में न म हा त्म ना ४ २ कृ त्या गौ दा रि ता प्रो क्त गो द र: स
B10.05	गौतमेन महात्मना॥४२॥ कृत्या गौदारिता प्रोक्तो गोदरः म-

Date	6th September 2020 continued…

L10.06	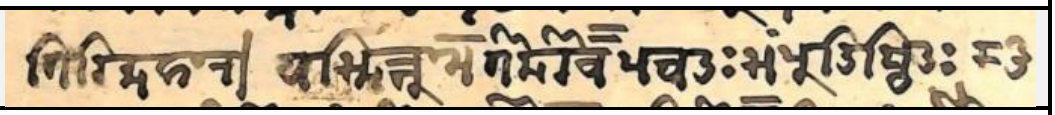
A10.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 गि रि र्म हा न् य स्मि न्ग्रा मे गो द रो वै प र्व तः सं प्र ति ष्ठि तः ४ ३
B10.06	गिरिर्महान्।यस्मिन् ग्रामे गोदरो वै पर्वतः संप्रतिष्ठितः॥४३॥
L10.07	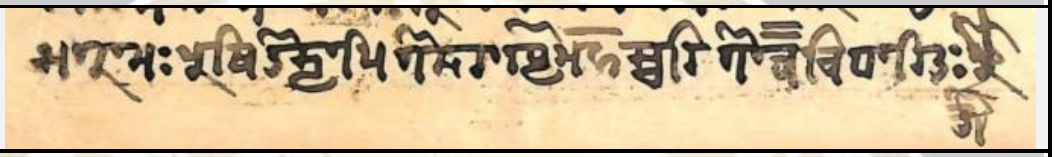
A10.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 23 स ग्रा मः प्र थितोद्या पि गो द राख्यो म हे श्व रिगौ र्वै वि धा रि तः
B10.07	स ग्रामः प्रथितोऽद्यापि गोदराख्यो महेश्वरि। गौर्वै विधारितः

Date	6th September 2020, continued…

	1. In Line 10.01 – one त is extra, that should be तस्मात्प्राद्रवद्देवि 2. Line **10.07** will continue in next page 3. Version – 3:
Notes	a. ततस्ततीर्थमभवद्गङ्गेति प्रथितं भुवि। तस्मात्प्राद्रवद्देवि वराहं गिरिमुत्तमम्॥४०॥ b. पुच्छमुत्क्षेपयाश्चक्रे गङ्गाजलसमर्क्षितम्। ततस्ततीर्थजं वारि वाराहे शिखरे परम्॥४१॥ c. गौतमेति च विख्यातं महापातकहं कलौ। यस्मिन् गिरौ महादेवि गौतमेन महात्मना॥४२॥ d. कृत्या गौदारिता प्रोक्तो गोदरः स गिरिर्महान्। यस्मिन् ग्रामे गोदरो वै पर्वतः संप्रतिष्ठितः॥४३॥ e. स ग्रामः प्रथितोऽद्यापि गोदराख्यो महेश्वरि। गौर्वै विधारितः

Page 11 Slokas L11.01 to L11.07

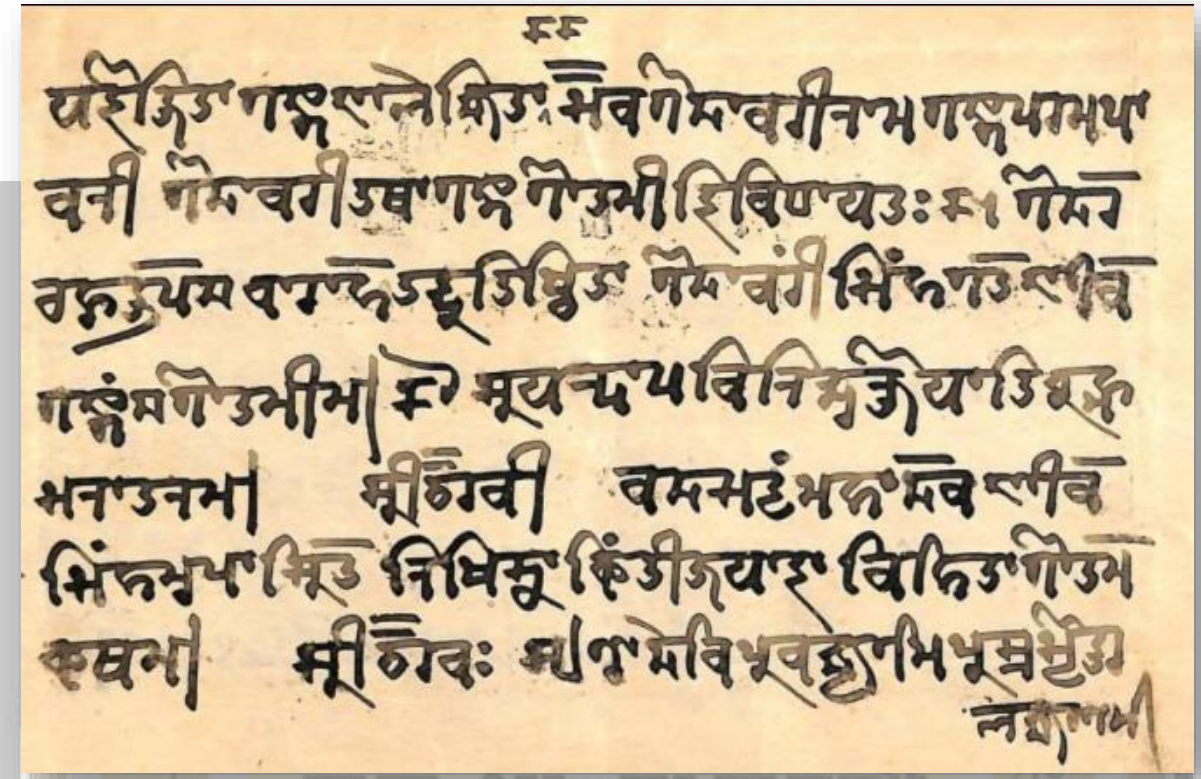

Sarada to Devanagari transliteration

Date	6th September 2020

L11.01	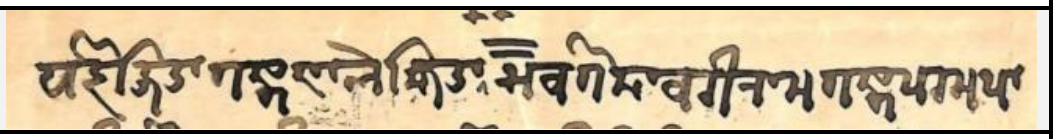
A11.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 2122232425 य त्रो र्थि ता ग ङ्गा ज ले क्षि ता ४४ सै व गो दा व री ना म ग ङ्गा प र म पा-
B11.01	यत्रोर्थिता गङ्गाजलेक्षिता ॥४४॥ सैव गोदावरी नाम गङ्गा परमपा-
L11.02	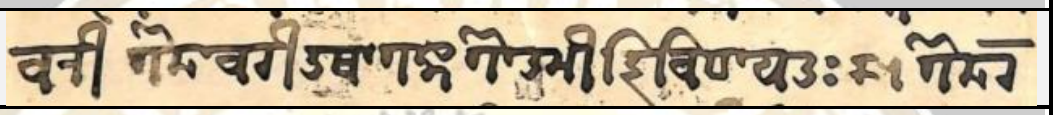
A11.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 18 19 202122 व नी गो दा व री त था ग ङ्गा गौ त मी त्रि वि धा य तः ४ ५ गो द रे
B11.02	वनी। गोदावरी तथा गङ्गा गौतमी त्रिविधायतः॥४५॥ गोदरे
L11.03	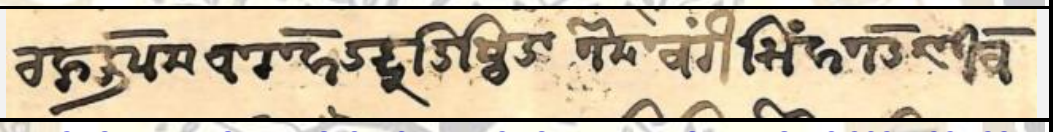
A11.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 2021 22 23 ब हु र्थ पे च वा रा हे त त्प्र ति ष्ठि ता गो दा वं री सिं ह ग ते जी वे
B11.03	बहुरूपे च वाराहे तत्प्रतिष्ठिता। गोदावरीं सिंहगतेजीवे
L11.04	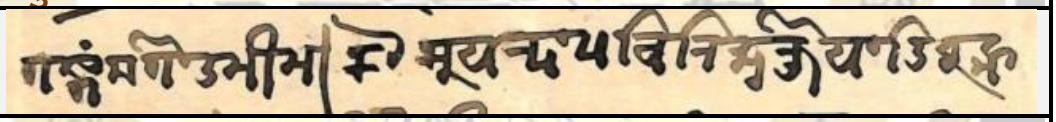
A11.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 ग ङ्गांच गौ त मी म् ४ ६ श्र य न्पा प वि नि र्मु क्तो या ति ब्र ह्म
B11.04	गङ्गां च गौतमीम्॥४६॥ श्रयन्पापविनिर्मुक्तो याति ब्रह्म
L11.05	
A11.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 1213 14 15 16 17 18 19 स ना त न म् श्री भै र वी व द स त्यं म हा दे व जी वे
B11.05	सनातनम्। श्रीभैरवी - वद सत्यं महादेव जीवे

Date	6th September 2020 continued…

L11.06	
A11.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 सिं ह मु पा श्रि ते नि षि द्धा किं ती र्थ या त्रा वि हि ता गौ त मे
B11.06	सिंहमुपाश्रिते निषिद्धा किं तीर्थयात्रा विहिता गौतमे
L11.07	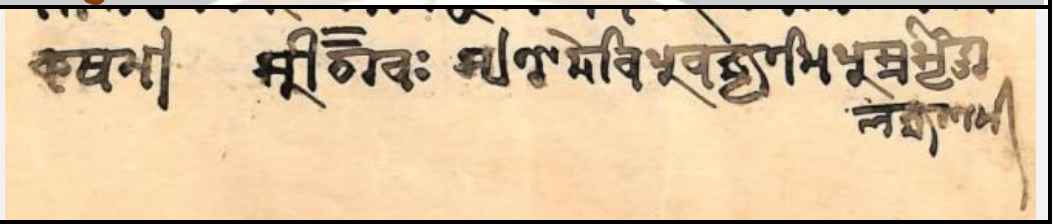
A11.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 क थ म् (?) श्री भै र व शृ णु दे वि प्र व क्ष्या मि प्र श्न स्यो त्त र ल क्ष ण म्
B11.07	कथम् (?) श्री भैरव शृणु देवि प्रवक्ष्यामि प्रश्नस्योत्तर लक्षणम्

Date	6th September 2020, continued…

Notes	1. [स ग्रामः प्रथितोऽद्यापि गोदराख्यो महेश्वरि। गौर्वै विधारितः] this line is from Line **10.07** 2. Version – 3: a. [स ग्रामः प्रथितोऽद्यापि गोदराख्यो महेश्वरि। गौर्वै विधारितः] यत्रोर्थिता गङ्गाजलेक्षिता॥४४॥ b. सैव गोदावरी नाम गङ्गा परमपावनी। गोदावरी तथा गङ्गा गौतमी त्रिविधायतः॥४५॥ c. गोदरे बहुरूपे च वाराहे तत्प्रतिष्ठिता। गोदावरीं सिंहगतेजीवे गङ्गां च गौतमीम्॥४६॥ श्रयन्पापविनिर्मुक्तो याति ब्रह्मसनातनम्। श्रीभैरवी - वद सत्यं महादेव जीवे d. सिंहमुपाश्रिते निषिद्धा किं तीर्थयात्रा विहिता गौतमे कथम् (?) श्री भैरव शृणु देवि प्रवक्ष्यामि प्रश्नस्योत्तर लक्षणम्

Page 12 Slokas L12.01 to L12.07

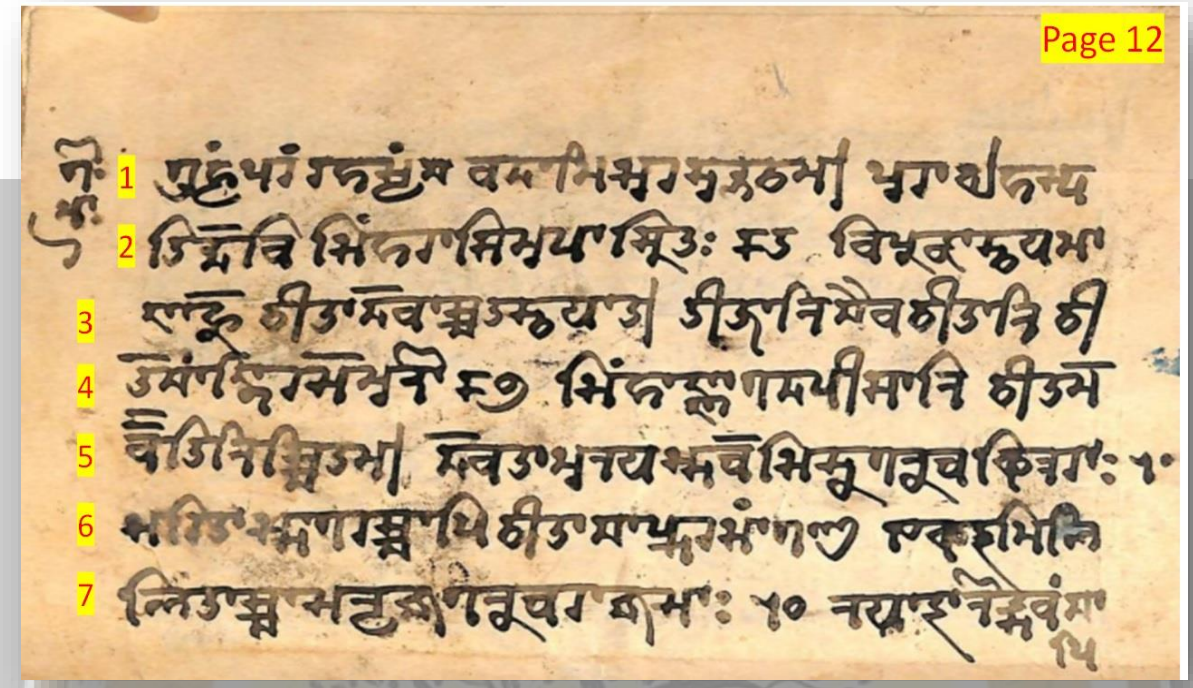

Sarada to Devanagari transliteration

Date	12th September 2020

L12.01	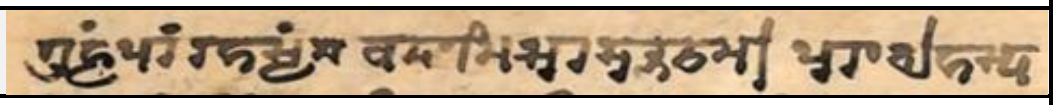
A12.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 गु ह्यं प रं र ह स्यं च व दा मि सु र दु र्ल भ म पु रा बृ ह स्प
B12.01	गुह्यं परं रहस्यं च वदामि सुरदुर्लभम्। पुरा बृहस्प-
L12.02	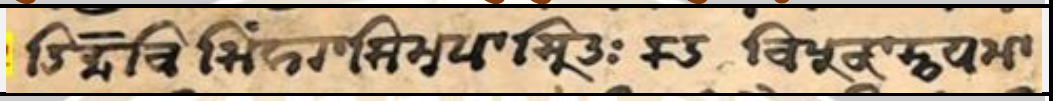
A12.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ति र्दे वि सिं ह रा शि मु पा श्रि तः ४ ७ वि प्र त्वा द्भ य मा
B12.02	तिर्देवि सिंहराशिमुपाश्रितः॥४७॥ विप्र त्वाद्भयमा-
L12.03	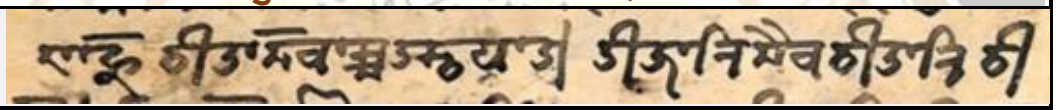
A12.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ज ह्ने भी ता दे वा श्च त द्भ या त् ती र्था नि चै व भी ता नि भी
B12.03	जह्ने भीता देवाश्च तद्भयात्। तीर्थानि चैव भीतानि भी-
L12.04	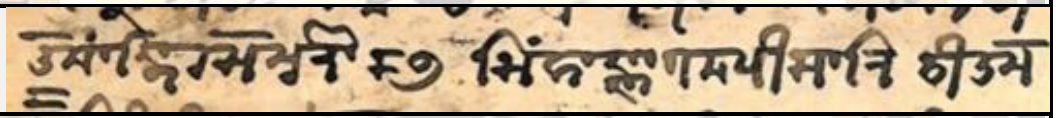
A12.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 181920 ते चां ङ्ग र से मु नौ ४ ९ सिं हा ज्ज ग द पी शा नि भी त में
B12.04	ते चांङ्गरसे मुनौ ॥४८॥ सिंहाज्जगदपीशानि भीतमे -
L12.05	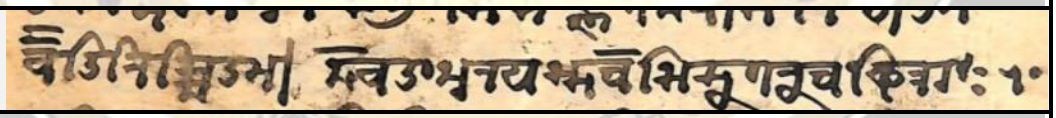
A12.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 वै ति नि श्चि त म् दे व ता मु न य स्म र्वे सि द्ध ग न्ध र्व कि न्न रा: ५०
B12.05	वैति निश्चितम्। देवता मुनयस्सर्वे सिद्धगन्धर्वकिन्नराः॥५०॥

Sarada to Devanagari transliteration

Date	12th September 2020 continued…

L12.06	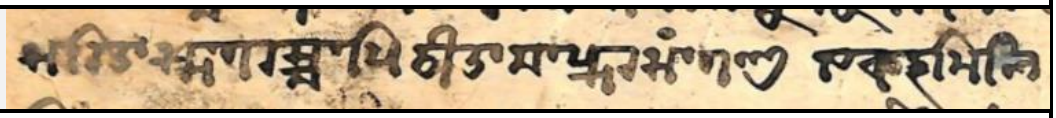
A12.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 स रि ता स्स ग र श्चा पि भी ता चा प्स र सां ग णा ए क त्र मि लि
B12.06	सरितास्सागरश्चापि भीता चाप्सरसां गणा एकत्र मिलि
L12.07	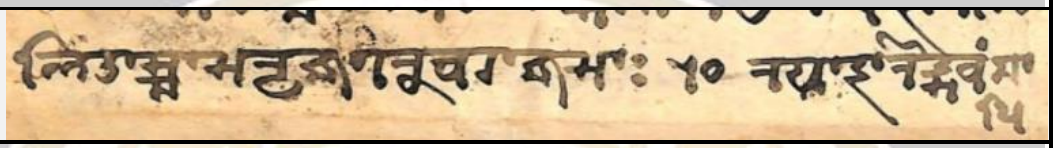
A12.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 22 लि ता श्चा स न्य क्ष ग न्ध र्व रा क्ष सा: ५ १ न या त्रा नो त्स वं चा पि
B12.07	लिताश्चासन्यक्षगन्धर्वराक्षसाः॥५१॥ न यात्रानोत्सवं चापि

Date	12th September 2020, continued...
Notes	1. Version – 3: a. गुह्यं परं रहस्यं च वदामि सुरदुर्लभम्। पुरा बृहस्पतिर्देवि सिंहराशिमुपाश्रितः॥४७॥ विप्र त्वाद्भयमाजह्ने भीता देवाश्च तद्भयात्। तीर्थानि चैव भीतानि भीते चाङ्गिरसो मुनौ॥४८॥ सिंहाज्जगदपीशानि भीतमेवैति निश्चितम्। देवता मुनयस्सर्वे सिद्धगन्धर्वकिन्नराः॥५०॥ सरितास्सागरश्चापि भीता चाप्सरसां गणा। एकत्र मिलिताश्चासन्यक्षगन्धर्वराक्षसाः॥५१॥ न यात्रा नोत्सवं चापि..

Page 13 Slokas L13.01 to L13.07

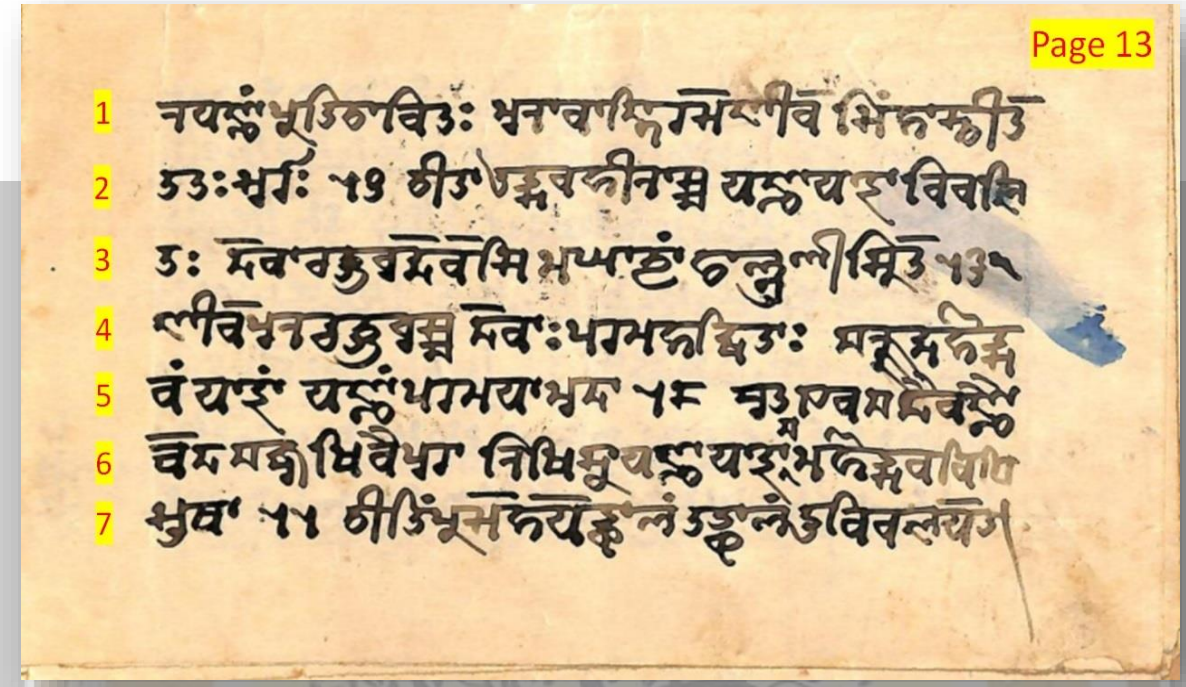

Sarada to Devanagari transliteration

Date	12th September 2020

L13.01	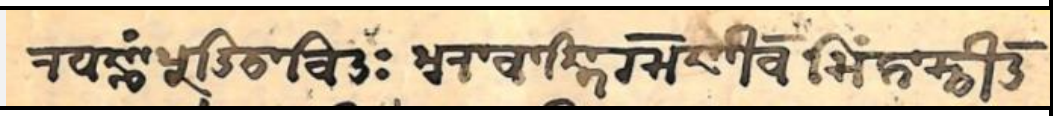
A13.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 न य ज्ञं प्र ति भा वि त: मु ना वा ङ्गि र से जी वे सिं हा द्भ ति
B13.01	न यज्ञं प्रतिभावित: मुनावाङ्गिरसे जीवे सिंहाद्भीते
L13.02	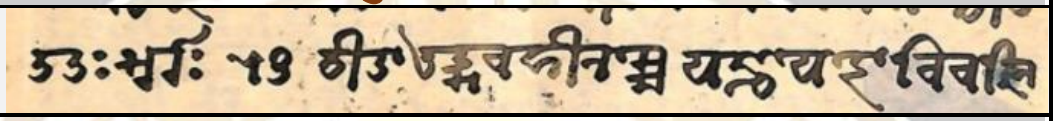
A13.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 त त: सु र: ५ २ भी ता त त्स व हि ना श्च य ज्ञ या त्रा वि व र्जि
B13.02	तत: सुर:॥५२॥ भीतातत्सवहिनाश्च यज्ञयात्राविवर्जि-
L13.03	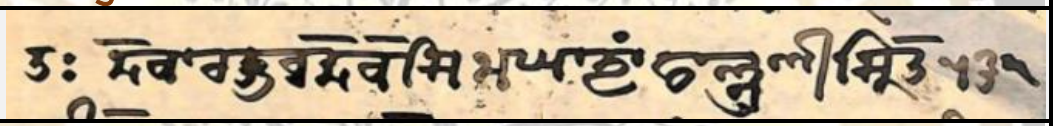
A13.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 1819 20 त: दे वा ब भू वु र्दे वे शि म घा भ्यां फा ल्गु णि श्रि ते ५ ३ ।
B13.03	त: देवा बभूवुर्देवे सिमघाभ्यां फाल्गुणीश्रिते॥५३॥
L13.04	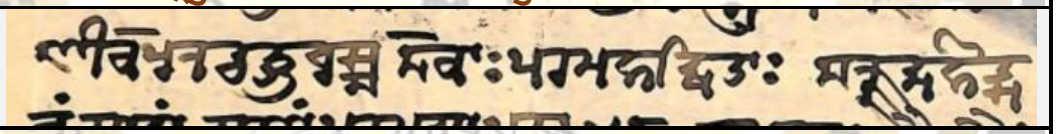
A13.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 1213 14 15 16 17 18 19 20 21 जी वे पु न र्ब भू वु श्च दे वा: प र म हु र्षि ता: च क्रू र्म हो त्स
B13.04	जीवे पुनर्बभूवुश्च देवाः परमहर्षिता:। चक्रुर्महोत्स-
L13.05	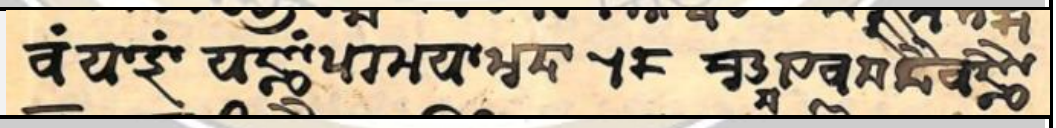
A13.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 141516 1718 19 20 वं या त्रं य ज्ञं प र म या मु दा ५ ४ अ त ए व दै व ज्ञै
B13.05	वं यात्रां यज्ञं परमया मुदा ॥५४॥ अतच एव च दैवज्ञै

Date	12th September 2020 continued…

L13.06	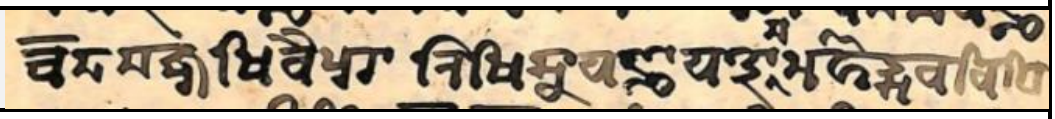
A13.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 र्वे द च क्षु षि वै पु रा नि षि द्धा य ज्ञ या त्राच मु हो त्स व वि धि
B13.06	र्वेदचक्षुषि वै पुरा निषिद्धा यज्ञयात्रा च महोत्सवविधि-
L13.07	
A13.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 स्त था ५ ५ भी तिं प्र से ह ये त्का लं त त्का लं भु वि व र्ज ये त्
B13.07	स्तथा॥५५॥ भीतिं प्रसेहयेत्कालं तत्कालं भुवि वर्जयेत्

Date	12th September 2020, continued…

Notes	1. Version – 3: a. न यज्ञं प्रतिभावितः मुनावाङ्गिरसे जीवे सिंहाद्भीते ततः सुरः॥५२॥ भीाततसवहीनाञ्च यज्ञायात्राविवर्जितः। देवा बभूवुर्देवेसिमघाभ्यां फाल्गुणीश्रिते ॥५३॥ जीवे पुनर्बभूवुश्च देवाः परमहर्षिताः। चक्रुर्महोत्सवं यात्रां यज्ञं परमया मुदा॥५४॥ अतच एव च दैवज्ञैर्वेदचक्षुषि वै पुरा निषिद्धा यज्ञयात्रा च महोत्सवविधिस्तथा॥५५॥ भीतिं प्रसेहयेत्कालं तत्कालं भुवि वर्जयेत् -

Page 14 Slokas L14.01 to L14.07

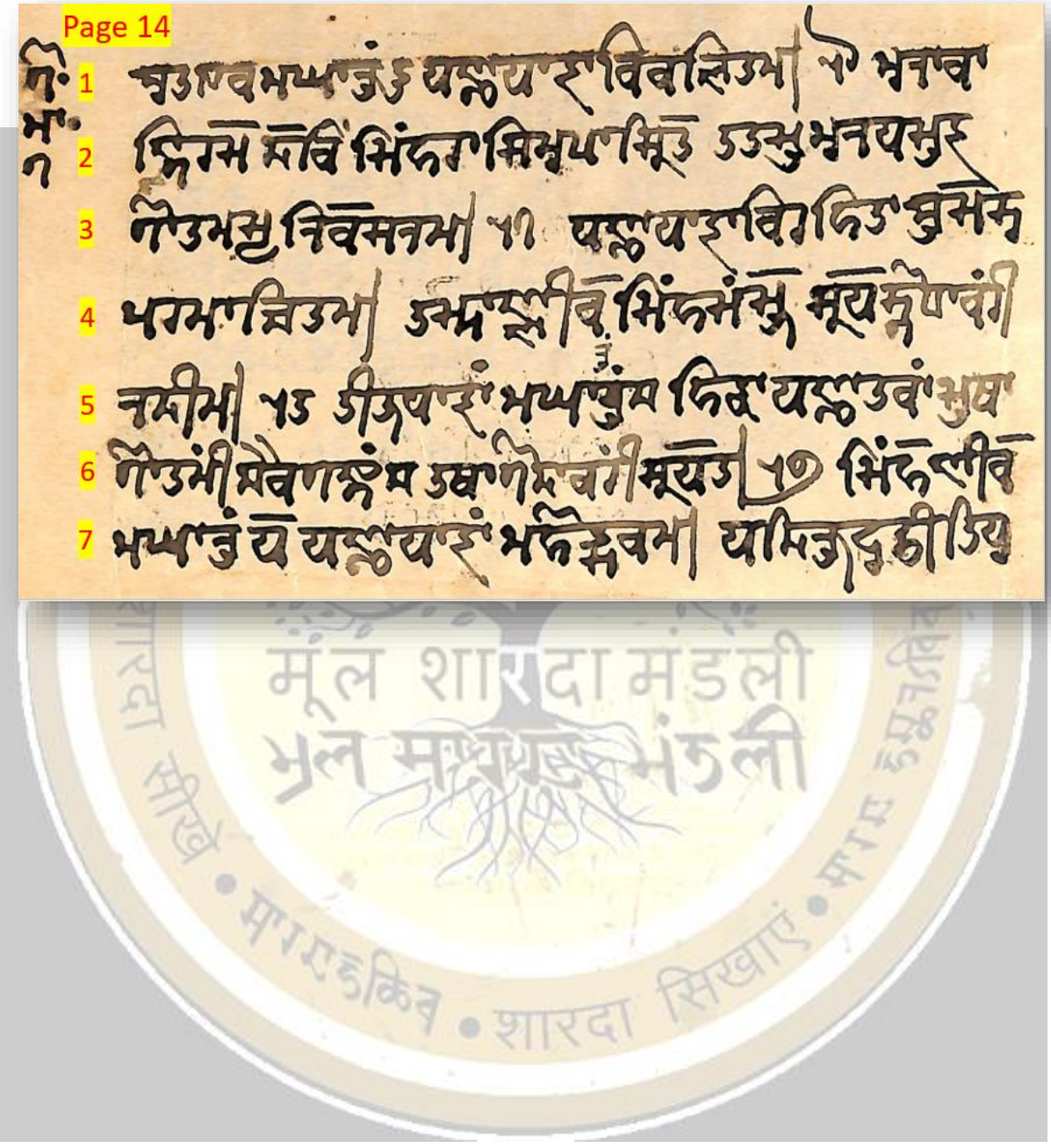

Sarada to Devanagari transliteration

Date	29th September 2020

L14.01	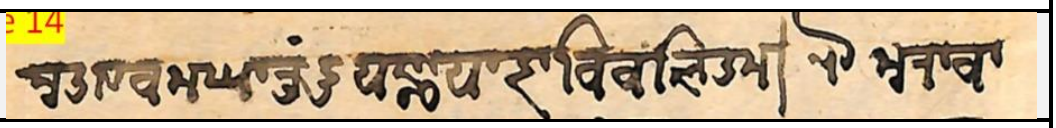
A14.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 अ त ए व म घा न्तं तु य ज्ञ या त्रा वि व र्जि त म् ५ ६ मु ना वा
B14.01	अत एव मघान्तं तुयज्ञयात्रा विवर्जितम् मुनावा-
L14.02	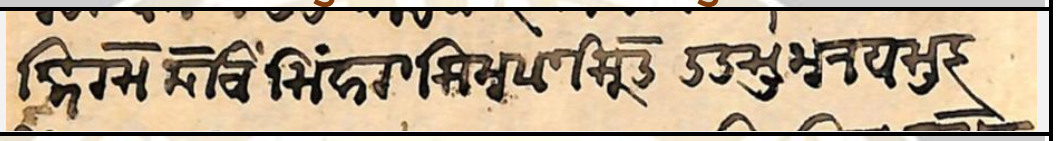
A14.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 इगि र से दे वि सिं ह रा शि मु पा श्रि ते त त स्तु मु न य स्त त्र
B14.02	इगिरसे देविं सिंहराशिमुपाश्रिते ततस्तु मुनयस्तत्र
L14.03	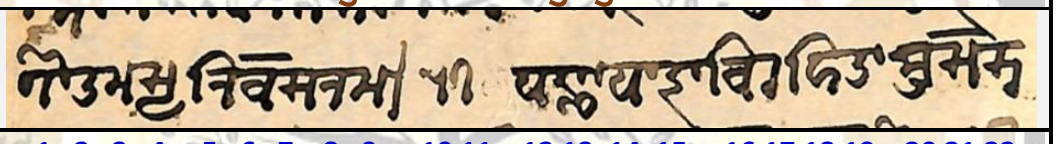
A14.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 गौ त म स्य नि वे श न म् ५ ७ य ज्ञ या त्रा वि र हि ता आ से दु
B14.03	गौतमस्य निवासनम् ॥५७॥ यज्ञयात्राविरहिता आसेदु
L14.04	
A14.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 प र मा र्चि त म् त स्मा ज्जी वे सिं ह सं स्थे श्र ये द्गो धा व री
B14.04	परमार्चितम्। तस्माज्जीवे सिंहसंस्थे श्रये गोदावरीं
L14.05	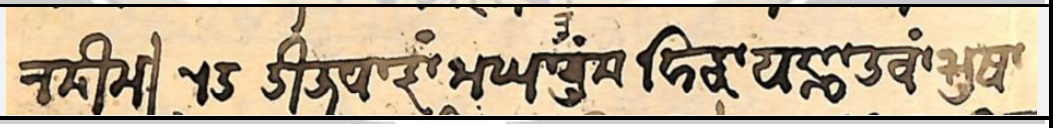
A14.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 न दी म् ५ ८ ति र्थ या त्रां म घा न्तं च हि त्वा य ज्ञ त वां स्त था
B14.05	नदीम् ॥५८॥ तीर्थयात्रां मघान्तं च हित्वा यज्ञतवांस्तथा।

Date	29th September 2020 continued…

L14.06	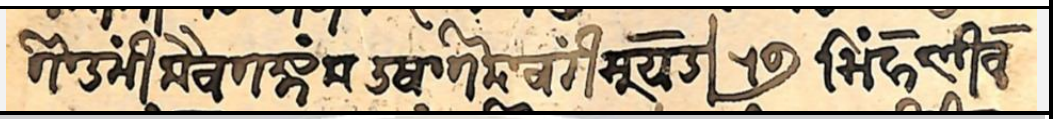
A14.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 गौ त मीं चै व ग ङ्गा च त था गो दा व रीं श्र ये त् ५ ९ सिं हे जी वे
B14.06	गौतमीं चैव गङं च तथा गोदावरीं श्रयेत् ॥५९॥ सिंहे जीवे
L14.07	
A14.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 म घा न्तं ये य ज्ञ या त्रां म हो त्स व म् य दि कु र्यु र्भी ति यु
B14.07	मघान्तं ये यज्ञयात्रां महोत्सवम्। यदि कुर्युर्भीतियु-

Date	29th September 2020, continued…

Notes	1. Clarity is required about the word **यज्ञतवांस्तथा** 2. Version – 3: a. **[भीतिं प्रसेहयेत्कालं तत्कालं भुवि वर्जयेत् -] अत एव मघान्तं तु यज्ञयात्रा विवर्जितम्॥५६॥** **मुनावाङ्गिरसे देविं सिंहराशिमुपाश्रिते। ततस्तु मुनयस्तत्र गौतमस्य निवासनम्॥५७॥** **यज्ञयात्राविरहिता आसेदु परमार्चितम्। तस्माज्जीवे सिंहसंस्थे श्रये गोदावरीं नदीम्॥५८॥** **तीर्थयात्रां मघान्तं च हित्वा यज्ञतवांस्तथा। गौतमीं चैव गङां च तथा गोदावरीं श्रयेत्॥५९॥** **सिंहे जीवे मघान्तं ये यज्ञयात्रां महोत्सवम्। यदि कुर्युर्भीतियु-**

Page 15 Slokas L15.01 to L15.07

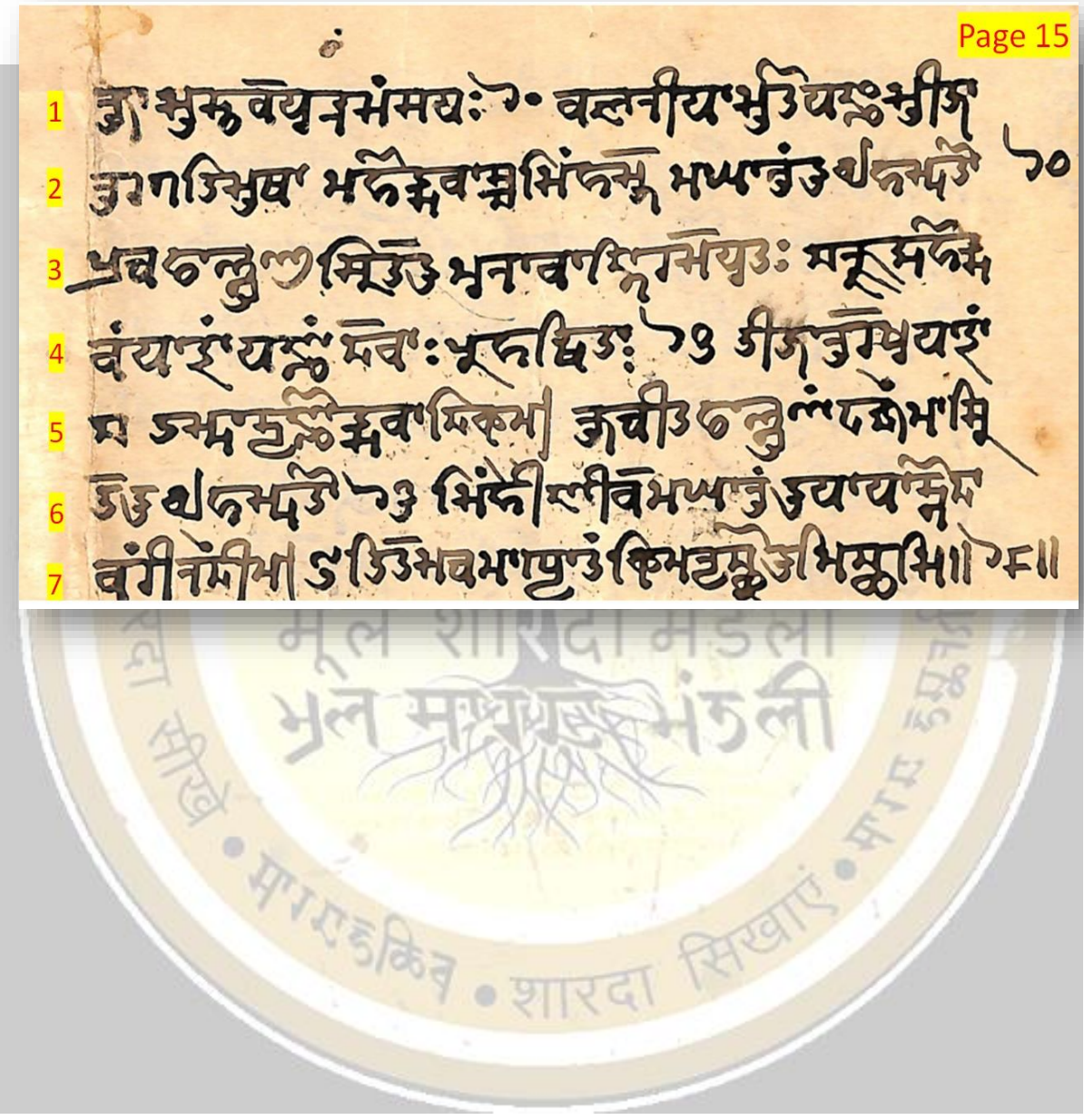

Sarada to Devanagari transliteration

Date	29th September 2020

L15.01	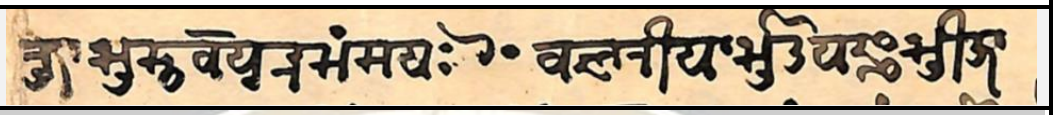
A15.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 क्ता स्त द्भ वे यु र्न सं श य: ६ ० व र्ज नी या स्त तो य ज्ञा स्ती र्था
B15.01	क्तास्तद्भवेयुर्न संशयः॥६०॥ वर्जनीयास्ततो यज्ञास्तीर्था
L15.02	
A15.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 2324 न्त र ग ति स्त था म हो त्स वा श्च सिं ह स्थे म घा न्तं तु बृ ह स्प तौ ६ १
B15.02	न्तरगतिस्तथा। महोत्सवाश्च सिंहस्थे मघान्तं तु बृहस्पतौ ॥६१॥
L15.03	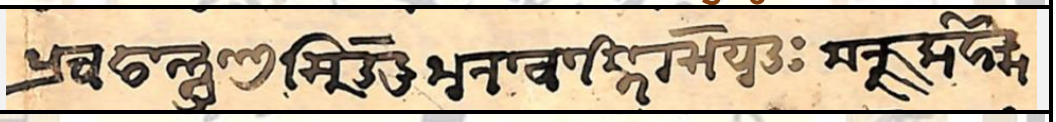
A15.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 20 21 पू र्व फा ल्गु णा श्रि ते तु मु ना वा ङ्गि र से यु त: च क्रु त्म हो त्स
B15.03	पूर्वफाल्गुणाश्रितेतु मुनावाङ्गिरसे युत: चक्रु महोत्स
L15.04	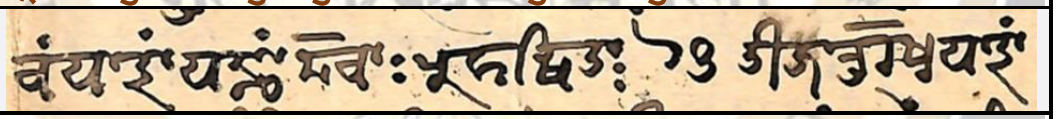
A15.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 वं या त्रां य ज्ञं दे वा: प्र ह र्षि ता: 6 २ ती र्था न्त रे षु या त्रां
B15.04	वं यात्रा यज्ञं देवाः प्रहर्षिताः॥६२॥ तीर्थान्तरेषु यात्रां
L15.05	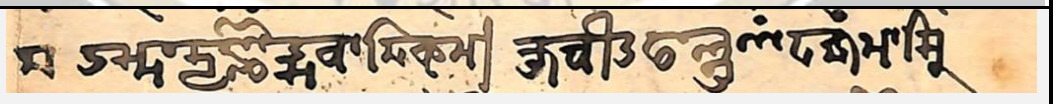
A15.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 1718 19 20 च त स्मा द्य ज्ञो त्स वा दि क म् कु र्वी त फा ल्गु णं प क्ष मा श्रि
B15.05	च तस्माद् यज्ञोत्सवादिकम्। कुर्वीत फाल्गुणं पक्षमाश्रि

Date	29th September 2020 continued…

L15.06	
A15.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ते तु बृ ह स्प तौ ६ ३ सिं ही जी वे म घा न्तं तु या या द्गो दा
B15.06	ते तु बृहस्पतौ॥६३॥ सिंही जीवे मघान्तं तु यायाद्गोदा
L15.07	
A15.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 1516 17 18 19 29 21 ॥ 2223॥ व रीं न्म दीम् इ ति ते स र्व मा ख्या तं कि म न्य च्छ्रो तु मि च्छ सि ॥६४ ॥
B15.07	वरीं नदीम्। इति ते सर्वमाख्यातं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि॥६४॥

Date	29th September 2020, continued…

Notes	1. Version – 3: [सिंहे जीवे मघान्तं ये यज्ञयात्रां महोत्सवम्। यदि कुर्युर्भीतियु-] -क्तास्तद्भवेयुर्न संशयः॥६०॥ वर्जनीयास्ततो यज्ञास्तीर्थान्तरगतिस्तथा। महोत्सवाश्च सिंहस्थे मघान्तं तु बृहस्पतौ॥६१॥ पूर्वफाल्गुणाश्रिते तु मुनावाङ्गिरसे युतः चचक्र (चर्क्रु) महोत्सवं यात्रा यज्ञं देवाः प्रहर्षिताः॥६२॥ तीर्थान्तरेषु यात्रां च तस्माद् यज्ञोत्सवादिकम्। कुर्वीत फाल्गुणं पक्षमाश्रिते तु बृहस्पतौ॥६३॥ सिंही जीवे मघान्तं तु यायाद्गोदावरीं नदीम्। इति ते सर्वमाख्यातं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि॥६४॥

Page 16 Slokas L16.01 to L16.07

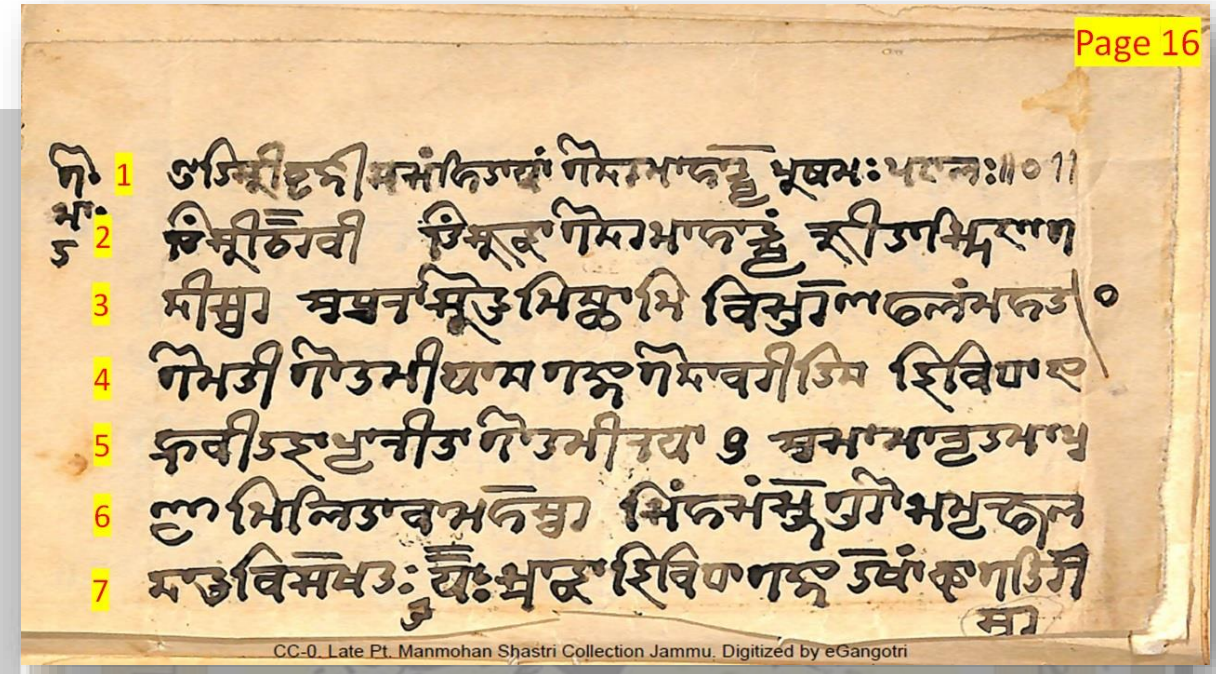

Date	24th October 2020

L16.01	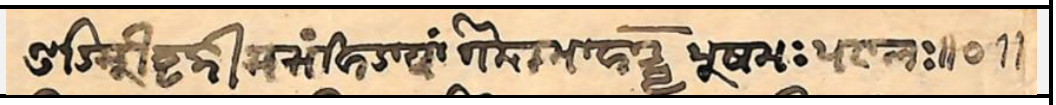
A16.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 ॥ 23 ॥ इ ति श्री भृ ङ्गी श सं हि ता यां गो द र मा हा त्म्ये प्र थ म: प ट ल: ॥ १ ॥
B16.01	इति श्रीभृङ्गी (श) संहितायां गोदरमाहात्म्ये प्रथम: पटल:॥१॥
L16.02	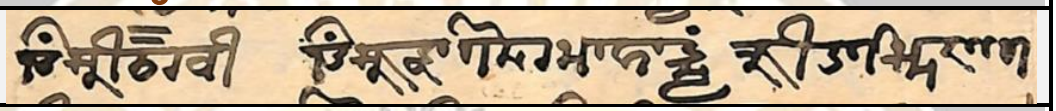
A16.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ॐ श्री भै र वी ॐ श्रु त्वा गो द र मा हा त्म्यं क्री ता स्मि ज ग
B16.02	ॐ श्रीभैरवी ॐ श्रुत्वा गोदरमाहात्म्यं क्रीतास्मि जग
L16.03	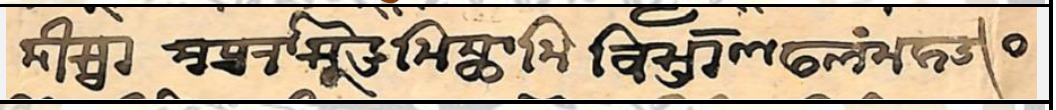
A16.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 दी श्व र अ धु ना श्रो तु मि च्छा मि वि स्त रे ण फ लं म ह त् १
B16.03	दीश्वर! अधुना श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण फलं महत् १
L16.04	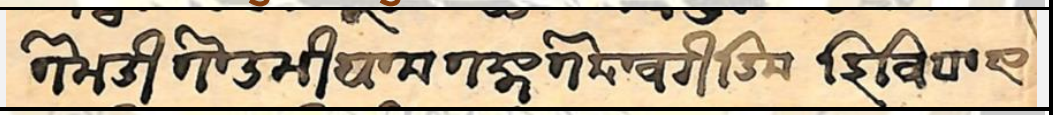
A16.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 गो म ती गौ त मि या च ग ङ्गा गो दा व री ति च त्रि वि धा जा
B16.04	गोमती गौतमी या च गङ्गा गोदावरीति च त्रिविधा जा-
L16.05	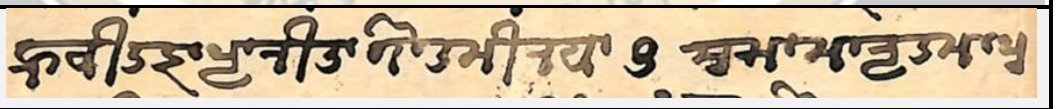
A16.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 ह्न वी त त्रा प्या नि ता गौ त मी न या ३ अ सा मा न्य त मा पु
B16.05	ह्नवी तत्राप्यानिता गौतमीनया ३ असामान्यतमा पु-

Sarada to Devanagari transliteration

Date	24th October 2020 (continued…)

L16.06	
A16.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 ण्या मि लि ता व म हे श्व र सिं ह सं स्थे गु रौ स म्य क्फ ल
B16.06	ण्या मिलिता वा महेश्वर सिंहसंस्थे गुरौ सम्यग्फल
L16.07	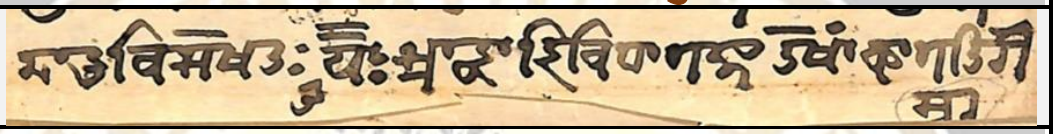
A16.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 दा तु वि शे ष त: ३ यै स्ना त्वा त्रि वि धा ग ङ्गा ते षां का ग ति री श र
B16.07	दातुविशेषत: ३ यैः स्नात्वा त्रिविधा गङ्गा तेषां का गतिरीश्वर

Date	24th October 2020, continued…

	1. **Version – 3**: इति श्रीभृङ्गी (श) संहितायां गोदरमाहात्म्ये प्रथम: पटल:॥०॥
Notes	ॐ श्रीभैरवी ॐ श्रुत्वा गोदरमाहात्म्यं क्रीतास्मि जगदीश्वर!। अधुना श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण फलं महत्॥१॥ गोमती गौतमी या च गङ्गा गोदावरीति च त्रिविधा जाह्नवी तत्राप्यानिता गौतमीनया॥२॥ असामान्यतमा पुण्या मिलिता वा महेश्वर। सिंहसंस्थे गुरौ सम्यग्फलदातुविशेषतः॥३॥ यैः स्नात्वा त्रिविधा गङ्गा तेषां का गतिरीश्वर !

Page 17 Slokas L17.01 to L17.07

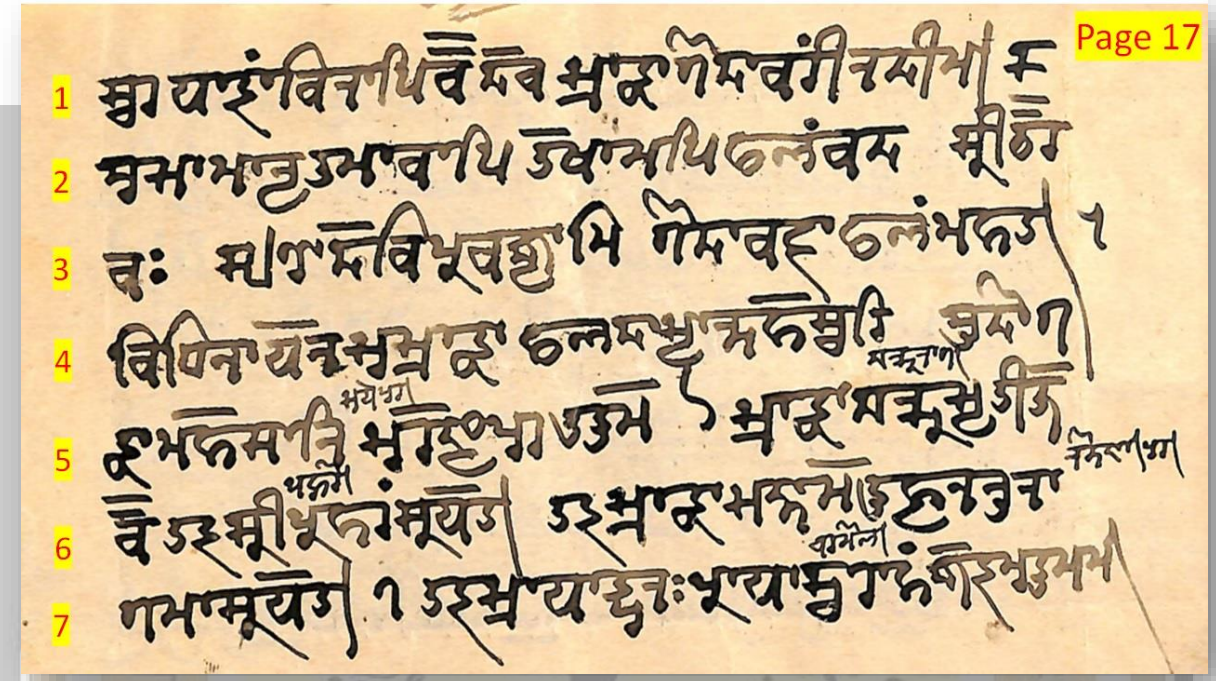

Date	24th October 2020

L17.01	
A17.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 श्व र या त्रां वि ना पि वै दे व स्ना त्वा गो दा व रीं न दी म् ४
B17.01	(श्वर) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम् ४
L17.02	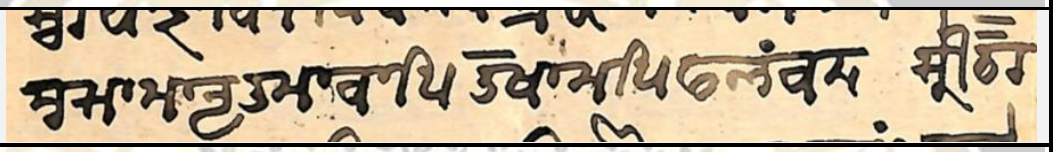
A17.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 अ सा मा न्य त मा वा पि ते षा म पि फ लं व द श्री भै र
B17.02	असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैर-
L17.03	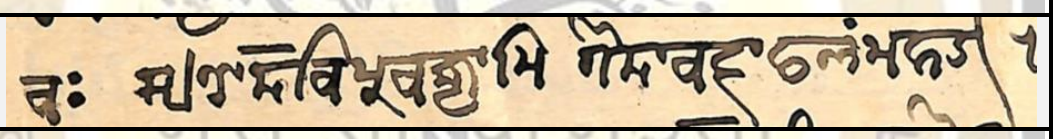
A17.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 व: शृ णु दे वि प्र व क्ष्य मि गो दा व र्या फ लं म ह त् ५
B17.03	व: शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्या फलं महत् ५
L17.04	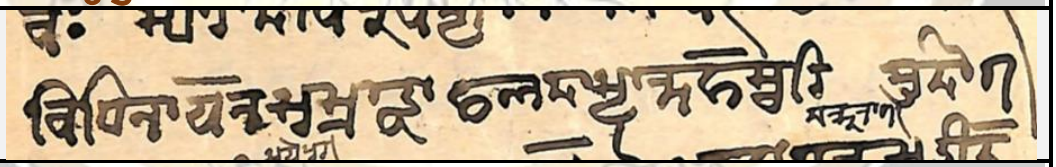
A17.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 वि धि ना ये न सु म्ना त्वा फ ल दा स्या न्म हे श्व रि आ दौ ग
B17.04	विधिना येन सुम्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ ग-
L17.05	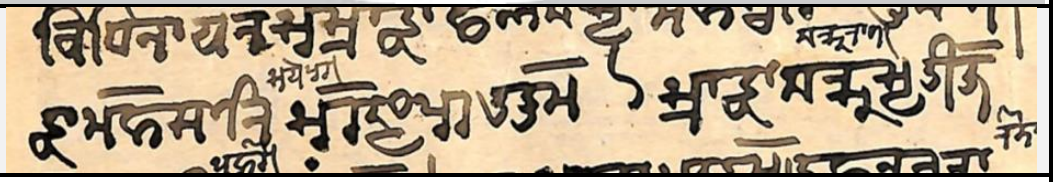
A17.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 21 त्वा म हे शा नि सु रे ज्या पु र उ त्त में ५ स्ना त्वा च न्द्र स्य ती र्थे सु ये पु र् च न्द्र ना ग्

B17.05	त्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे ५ स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे
Date	24th October 2020 (continued…)

L17.06	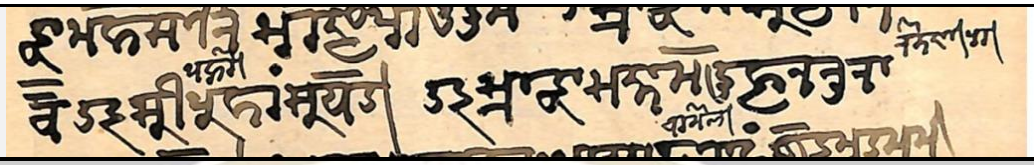
A17.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 वै त त्र श्री प्र ह रं श्र ये त् त त्र स्ना त्वा स ङ्ग में तु ह्यन न्तना प हु रो व र मो ल् न डो ज् पु र्
B17.06	वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना
L17.07	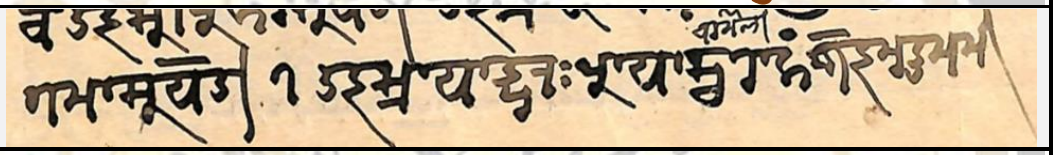
A17.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 ग मा श्र ये त् ६ त त्र स्ना या त्पु नः प्रा या द्व रा हं क्षे त्र मु त्त म्
B17.07	गमाश्रयेत् ६ तत्र स्नायात्पुनः प्रायाद्वराहं क्षेत्रमुत्तम्

Date	24th October 2020, continued…

	1. Version – 3:
Notes	(यैः स्नात्वा त्रिविधा गङ्गा तेषां का गतिरीश्वर !) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम्॥४॥ असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैरव: शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्याः फलं महत्॥५॥ विधिना येन सुस्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ गत्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे॥६॥ स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना गमाश्रयेत्॥७॥ तत्र स्नायात्पुन: प्रायाद्वराहनं क्षेत्रमुत्तम्

Page 18 Slokas L18.01 to L18.07

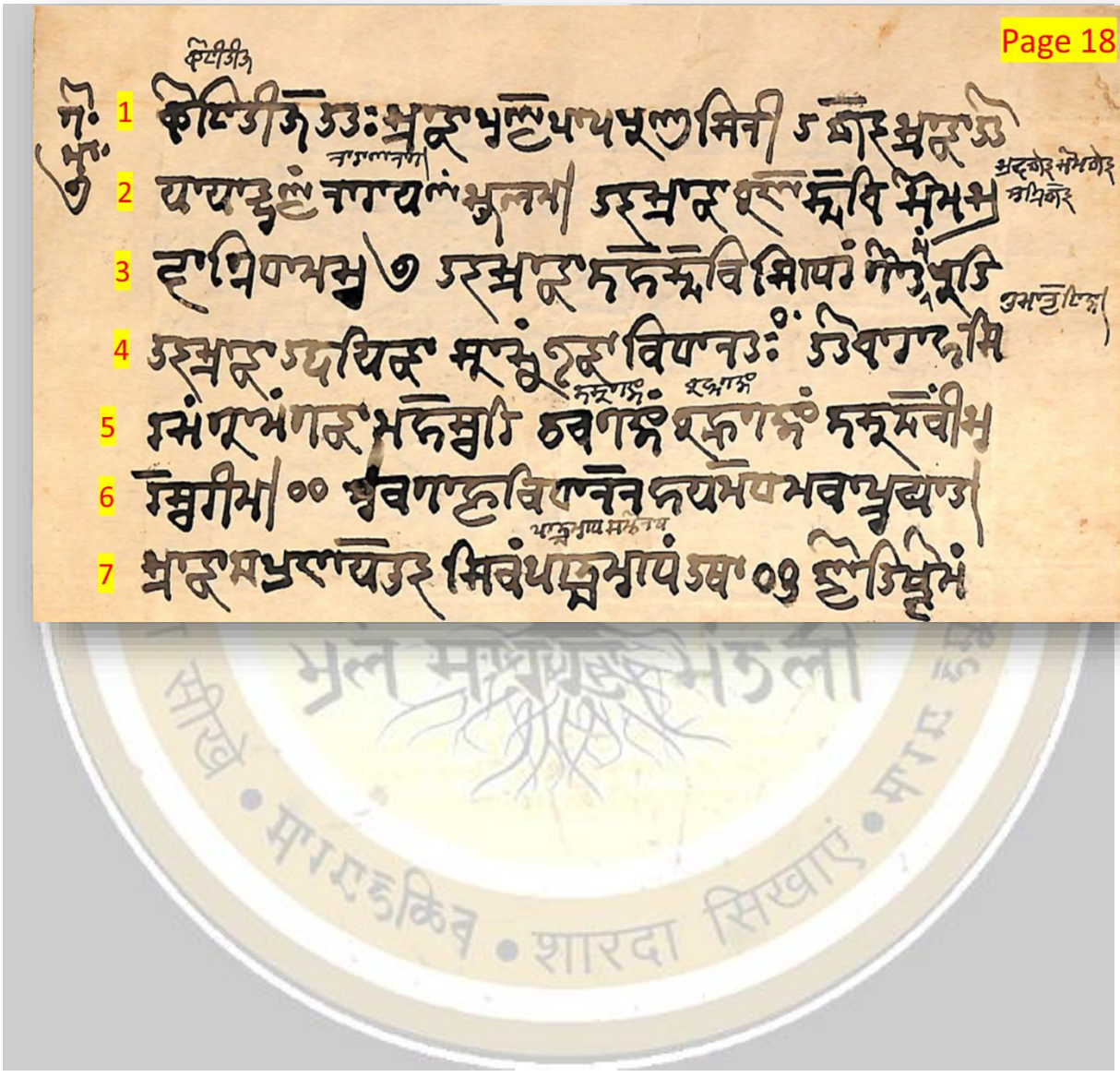

Date	31st October 2020

L18.01	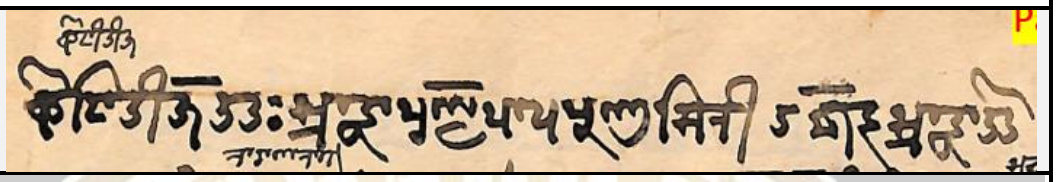
A18.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 श्व र या त्रां वि ना पि वै दे व स्ना त्वा गो दा व रीं न दी म् ४
B18.01	(श्वर) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम् ४
L18.02	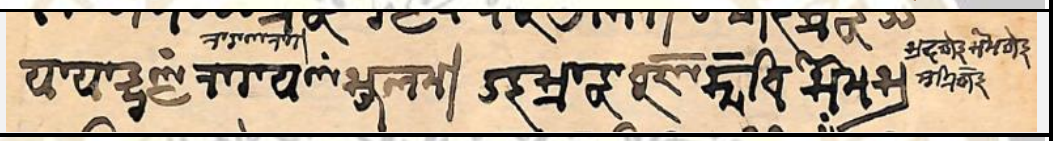
A18.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 अ सा मा न्य त मा वा पि ते षा म पि फ लं व द श्री भै र
B18.02	असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैर-
L18.03	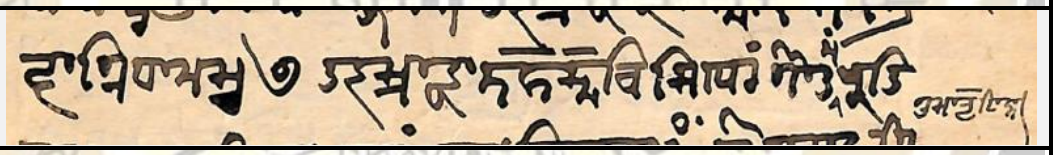
A18.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 व: शृ णु दे वि प्र व क्ष्य मि गो दा व र्या फ लं म ह त् ५
B18.03	व: शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्या फलं महत् ५
L18.04	
A18.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 वि धि ना ये न सु म्ना त्वा फ ल दा स्या न्म हे श्व रि आ दौ ग
B18.04	विधिना येन सुम्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ ग-
L18.05	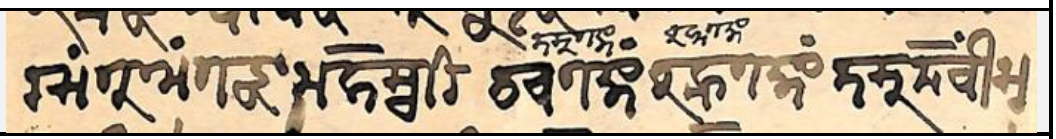
A18.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 21 त्वा म हे शा नि सु रे ज्या पु र उ त्त में ५ स्ना त्वा च न्द्र स्य ती र्थे

	सु ये पु र् च न्द्र ना ग्
B18.05	त्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे ५ स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे

Date	31st October 2020

L18.06	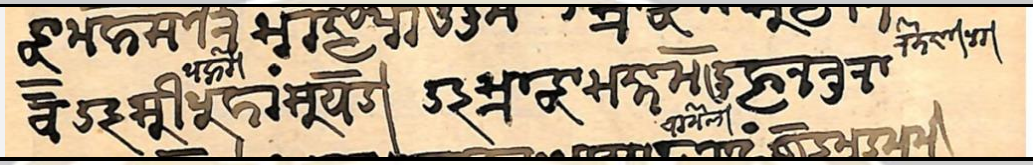
A18.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 वै त त्र श्री प्र ह रं श्र ये त् त त्र स्ना त्वा स ङ्ग मे तु ह्यन न्तना प हु रो व र मो ल् न डो ज् पु र्
B18.06	वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना
L18.07	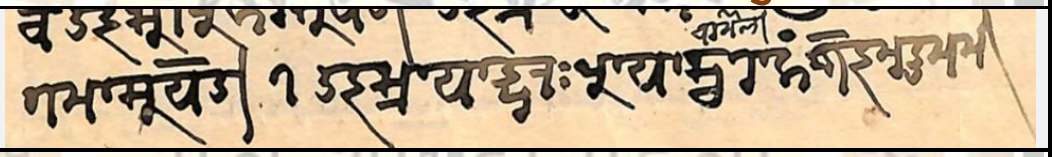
A18.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 ग मा श्र ये त् ६ त त्र स्ना या त्पु न: प्रा या द्व रा हं क्षे त्र मु त्त म्
B18.07	गमाश्रयेत् ६ तत्र स्नायात्पुन: प्रायाद्वराहं क्षेत्रमुत्तम्

Date	31st October 2020, continued…

Notes

1. **Version – 3:**

(यैः स्नात्वा त्रिविधा गङ्गा तेषां का गतिरीश्वर !) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम्॥४॥
असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैरव: शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्याः फलं महत्॥५॥
विधिना येन सुस्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ गत्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे॥६॥
स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना गमाश्रयेत्॥७॥
तत्र स्नायात्पुन: प्रायाद्वराह्नं क्षेत्रमुत्तम्

Page 19 Slokas L19.01 to L19.07

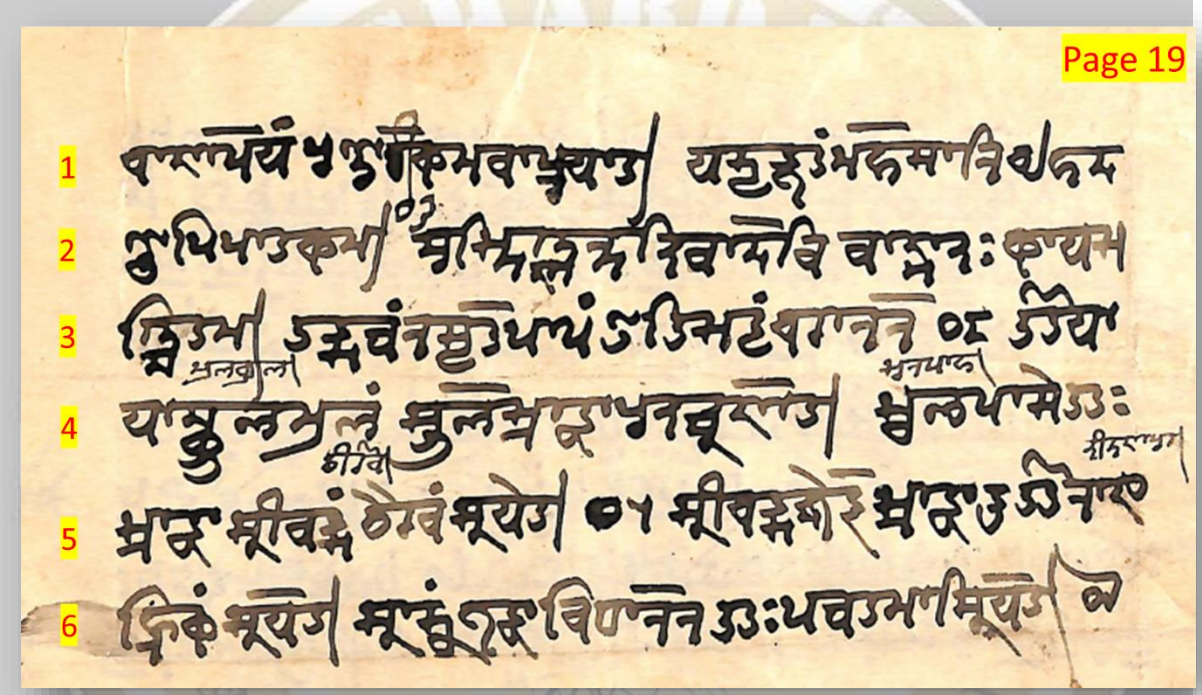

Date	31st October 2020

L19.01	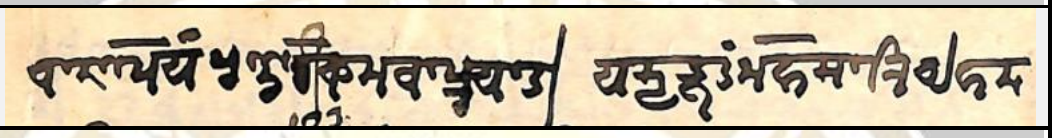
A19.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 श्व र या त्रां वि ना पि वै दे व स्ना त्वा गो दा व रीं न दी म् ४
B19.01	(श्वर) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम् ४
L19.02	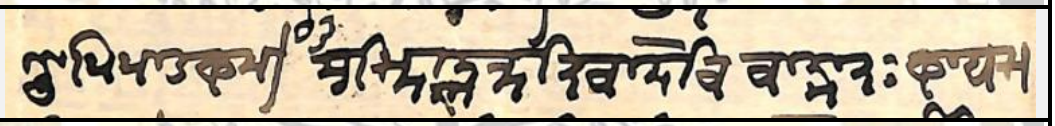
A19.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 अ सा मा न्य त मा वा पि ते षा म पि फ लं व द श्री भै र
B19.02	असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैर-
L19.03	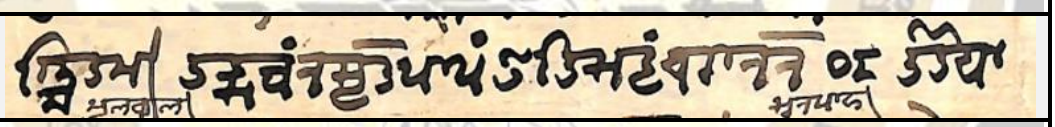
A19.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 व: शृ णु दे वि प्र व क्ष्य मि गो दा व र्या फ लं म ह त् ५
B19.03	व: शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्या फलं महत् ५
L19.04	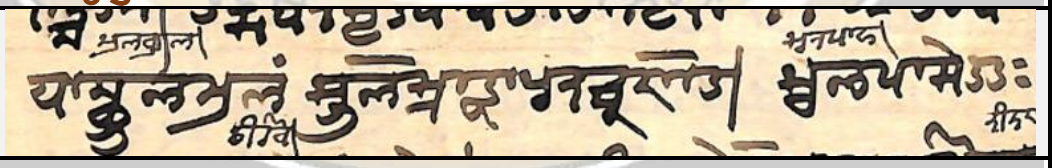
A19.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 वि धि ना ये न सु म्ना त्वा फ ल दा स्या न्म हे श्व रि आ दौ ग
B19.04	विधिना येन सुम्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ ग-
L19.05	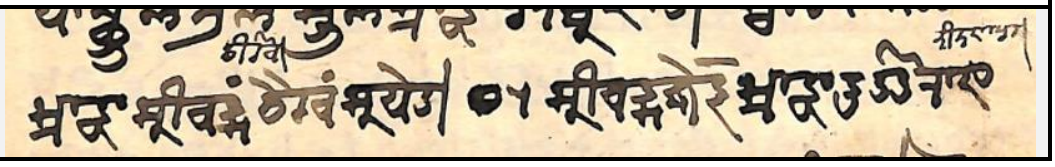

A19.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 21 त्वा म हे शा नि सु रे ज्या पु र उ त्त में ५ स्ना त्वा च न्द्र स्य ती र्थे सु ये पु र् च न्द्र ना ग्
B19.05	त्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे ५ स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे

Date	31st October 2020

L19.06	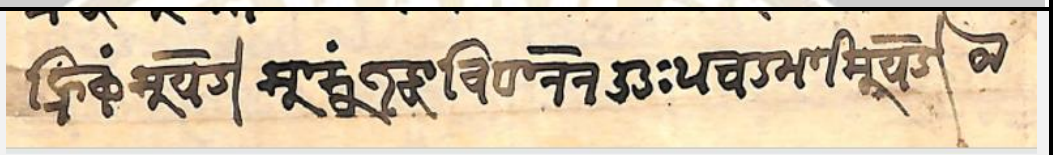
A19.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 1112 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 वै त त्र श्री प्र ह रं श्र ये त् त त्र स्ना त्वा स ङ्ग में तु ह्यन न्तना प हु रे व र मो ल् न डो ज् पु र्
B19.06	वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना

Date	31st October 2020, continued…

Notes

1. **Version – 3:**

(यैः स्नात्वा त्रिविधा गङ्गा तेषां का गतिरीश्वर !) यात्रां विनापि वै देव स्नात्वा गोदावरीं नदीम्॥४॥
असामान्यतमा वापि तेषामपि फलं वद श्रीभैरवः शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गोदावर्याः फलं महत्॥५॥
विधिना येन सुस्नात्वा फलदास्यान्महेश्वरि! आदौ गत्वा महेशानि सुरेज्या पुर उत्तमे॥६॥
स्नात्वा चन्द्रस्य तीर्थे वै तत्र श्रीप्रहरं श्रयेत् तत्र स्नात्वा सङ्गमे तु ह्यनन्तना गमाश्रयेत्॥७॥
तत्र स्नायात्पुनः प्रायाद्वराहनं क्षेत्रमुत्तम्

Sarada to Devanagari transliteration

Sarada to Devanagari transliteration